साान्ध्य हिन्दी दैनिक

जौनपुर से प्रकाशित

देश की उपासना

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

वर्ष - 03 | अंक - 93 | जौनपुर, शनिवार, 23 नवम्बर 2024 | सान्ध्य दैनिक (संस्करण) | पेज - 4 | मूल्य - 2 रूपये

बुद्ध के सिद्धांतों से निकलेगा युद्ध का समाधान - राजनाथ

नई दिल्ली, एजेंसी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने विभिन्न देशों के बीच बढ़ते तनाव को देखते हुए गुरुवार को कहा कि विश्व को जारी युद्धों और अंतरराष्ट्रीय क्रम की चुनौतियों के समाधान के लिए बुद्ध के सिद्धांतों को अपनाना चाहिए। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि अंतरराष्ट्रीय मुद्दों को सुलझाने के लिए भारत ने हमेशा से बातचीत का रास्ता अपनाया है और इसकी वकालत भी करता है।

बुद्ध के शांति सिद्धांत को अपनाएं

लाओस दौरे पर गए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 11वें आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक और (एडीएमएम प्लस) में चीन के डोंग जून समेत अपने समकक्षों को संबोधित किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि विश्व का तेजी से विभिन्न क्षेत्रों और खेमों में ध्रुवीकरण हो रहा है। इससे स्थापित वर्ल्ड आर्डर में तनाव पैदा हो रहा है।

दस देशों का आसियान सम्मेलन लाओस की राजधानी वियनतियाने में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में हिस्सा लेने पहुंचे रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सदस्य देशों से आग्रह किया कि हम सभी को भगवान बुद्ध के शांति और सहअस्तित्व के सिद्धांत को और गहराई से अपनाना चाहिए।

भारत ने हमेशा बातचीत का रास्ता चुना

इन सिद्धांतों का पालन करते हुए ही भारत ने जटिल अंतर राष्ट्रीय मुद्दों को बातचीत से सुलझाया है। भारत हमेशा से स्पष्ट बातचीत और शांतिपूर्ण समझौते के लिए प्रतिबद्ध रहा है। भारत ने सीमा विवादों से लेकर व्यापारिक समझौतों और अंतरराष्ट्रीय चुनौतियों के लिए यही रास्ता चुना है। खुलकर बातचीत करने से विश्वास, आपसी समझ और सहयोग की नींव रखी जाती है जो स्थायी साझेदारी के लिए जरूरी है। बातचीत की ताकत हमेशा प्रभावी और सकारात्मक नतीजे देने वाली होती है। इससे वैश्विक मंच पर तालमेल और स्थिरता बढ़ती है।

हिंद–प्रशांत क्षेत्र पर भारत का रुख

हिंद–प्रशांत क्षेत्र पर भारत के रुख को स्पष्ट करते हुए रक्षा मंत्री ने कहा कि भारत आसियान के दस देशों की भूमिका को क्षेत्रीय शांति व समृद्धि के लिए अच्छी तरह समझता है। इस संबंध में भारत आचार–संहिता के निर्धारण पर ऐसे मानक देखना चाहता है जो किसी पूर्वाग्रह से वैधानिक अधिकार निर्धारित नहीं करें।

उन्होंने दक्षिण चीन सागर के लिए भी आचार संहिता होने पर जोर देते हुए कहा कि इस क्षेत्र के विभिन्न देश चीन की बढ़ती सैन्य मौजूदगी के दबाव को झेल रहे हैं। ध्यान रहे, चीन आचार संहिता का कड़ा विरोध करता है।

राष्ट्र प्रथम' की भावना भारत की प्रगति की कुंजी है – मुर्मू

नई दिल्ली, एजेंसी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने मुल्क को विकसित देश बनाने के लिए शुक्रवार को लोगों के बीच ''राष्ट्र प्रथम'' की भावना पैदा करने के महत्व पर जोर दिया। राष्ट्रवादी विचारकों'' की एक संगोष्ठी, ''लोकमंथन –2024'' के उद्घाटन के अवसर पर एक सभा को संबोधित कर रही थीं। राष्ट्रपति ने कहा कि औपनिवेशिक शासकों ने न केवल ''भारत का आर्थिक शोषण किया'' बल्कि ''इसके सामाजिक ताने– बाने को भी नष्ट करने का प्रयास किया। उन्होंने कहा, शासकों ने हमारी समृद्ध बौद्धिक परंपराओं की उपेक्षा की, उन्होंने नागरिकों में सांस्कृतिक हीनता की भावना पैदा की। हमारी एकता को कमजोर करने के लिए ऐसी प्रथाएं हम पर थोपी गईं। सदियों की पराधीनता ने नागरिकों को गुलामी की मानसिकता में पहुंचा दिया। विकसित भारत के लिए 'राष्ट्र प्रथम' की भावना पैदा करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि भारतीय समाज को विभाजित करने और कृत्रिम मतभेद पैदा करने के प्रयासों का उद्देश्य एकता को कमजोर करना था। हालांकि, उन्होंने कहा कि भारतीयता की भावना ने राष्ट्रीय एकता की लौ को जीवित रखा है। इस कार्यक्रम में तेलंगाना के राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा, केंद्रीय कोयला और खान मंत्री जी किशन रेड्डी, तेलंगाना महिला और बाल कल्याण मंत्री डी अनसूया और आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत शामिल हुए।

ब्रांड आंध्र की छवि हुई धूमिल, अडानी मामले में चंद्रबाबू नायडू का बयान

तेलगांना, एजेंसी। पूर्व मुख्यमंत्री वाईएस जगन मोहन रेड्डी के खिलाफ कार्रवाई की मांग करने वाले कुछ एनडीए सदस्यों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए, नायडू ने कहा कि पिछली वाईएसआरसीपी सरकार के खिलाफ आरोपों ने आंध्र प्रदेश की ब्रांड छवि को नुकसान पहुंचाया है। यह दुख की बात है। हमारी प्रतिष्ठा को ठेस पहुंची है। वाईएसआरसीपी ने एक बयान जारी कर कहा कि आंध्र प्रदेश बिजली वितरण कंपनियों और अदानी समूह के बीच कोई सीधा समझौता नहीं हुआ है। अमेरिका में गौतम अडानी को दोषी ठहराए जाने के बाद राज्य पर लगे आरोपों पर पहली बार प्रतिक्रिया देते हुए आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने विधानसभा में कहा कि राज्य सरकार के पास अभियोग रिपोर्ट हैं और उन्होंने आश्वासन दिया कि किसी भी प्रकार की अनियमितता पर कार्रवाई की जाएगी। जब से उनकी तेलुगु देशम पार्टी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार सत्ता में आई है, वह 2019 से 2024 तक वाईएसआरसीपी शासन के दौरान कथित भ्रष्टाचार पर चर्चा कर रही है। नायडू ने विधान सभा में कहा कि मेरे पास अमेरिका में दायर अभियोग की सभी रिपोर्ट हैं। हम उनका अध्ययन करेंगे और उसके अनुसार कार्रवाई करेंगे। हम बताएंगे कि हम क्या कार्रवाई करेंगे। पूर्व मुख्यमंत्री वाईएस जगन मोहन रेड्डी के खिलाफ कार्रवाई की मांग करने वाले कुछ एनडीए सदस्यों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए, नायडू ने कहा कि पिछली वाईएसआरसीपी सरकार के खिलाफ आरोपों ने आंध्र प्रदेश की ब्रांड छवि को नुकसान पहुंचाया है। यह दुख की बात है। हमारी प्रतिष्ठा को ठेस पहुंची है। वाईएसआरसीपी ने शुक्रवार को एक बयान जारी कर कहा कि आंध्र प्रदेश बिजली वितरण कंपनियों और अदानी समूह के बीच कोई सीधा समझौता नहीं हुआ है। राज्य सरकार ने बिजली खरीदने के लिए SECI के साथ एक समझौता किया था। एपी बिजली वितरण कंपनियों और अदानी समूह सहित किसी भी अन्य संस्थाओं के बीच कोई सीधा समझौता नहीं है। इसलिए, अभियोग के आलोक में राज्य सरकार पर लगाए गए आरोप गलत हैं।

भारत की सांस्कृतिक विविधता को दुनिया भर में मनाया जाए - पीएम मोदी

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी तीन देशों की यात्रा के दौरान इटली, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया समेत कई देशों के अपने समकक्षों से मुलाकात की। बैठकों के बाद पीएम मोदी ने वैश्विक नेताओं को संस्कृति से भरपूर उपहार दिए।

पिछले कुछ वर्षों में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत की विदेशी कूटनीति को सांस्कृतिक विविधता के जीवंत प्रदर्शन में बदल दिया है। प्रत्येक अंतर्राष्ट्रीय यात्रा के साथ, वह न केवल भारत के राजनयिक एजेंडे को आगे बढ़ाते हैं, बल्कि इसकी परंपराओं, भाषाओं, कला और आध्यात्मिकता का प्रदर्शन करते हुए इसकी समृद्ध विरासत भी रखते हैं। संस्कृति और कूटनीति के इस अनूठे मिश्रण के माध्यम से, पीएम मोदी यह सुनिश्चित करते हैं कि

भारत की सांस्कृतिक विविधता को न केवल स्वीकार किया जाए बल्कि दुनिया भर में मनाया जाए, जिससे हर विदेशी यात्रा भारत की विविधता में एकता के उत्सव में बदल जाए। नाइजीरिया, ब्राजील और गुयाना की अपनी यात्रा में पीएम मोदी अपने साथ देश के कोने–कोने से अनोखे तोहफे लेकर आए. यात्रा के दौरान, पीएम अपने साथ महाराष्ट्र से 8, जम्मू–कश्मीर से 5, आंध्र प्रदेश और राजस्थान से 3–3, झारखंड से 2 और कर्नाटक, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, बिहार, ओडिशा और लद्दाख से 1–1 उपहार लेकर आए। महाराष्ट्र के उपहारों में सिलोफर पंचामृत कलश (बर्तन) शामिल है – कोल्हापुर, महाराष्ट्र से पारंपरिक शिल्प कौशल का एक शानदार उदाहरण, जो नाइजीरिया के राष्ट्रपति को दिया गयाय वारली पेंटिंग – मुख्य रूप से महाराष्ट्र के दहानू, तलसारी और पालघर क्षेत्रों में स्थित वार्ली जनजाति से उत्पन्न एक आदिवासी कला रूप, ब्राजील के राष्ट्रपति को दिया गया और कैरिकॉम देशों के नेताओं को दिए गए अनुकूलित उपहार बाधा में उपहारों में से एक के रूप में भी दिया गयाय पुणे से शीर्ष पर सिल्वर कैमल हेड के साथ प्राकृतिक रफ नीलम, ऑस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री को दिया गयाय पारंपरिक डिजाइन वाला हाथ से नक्काशीदार चांदी का शतरंज सेट, पुर्तगाल के प्रधान मंत्री को दिया गयाय उत्तम चांदी का मोमबत्ती स्टैंड, इटली के प्रधान मंत्री को दिया गया और हाथ से उकेरा गया चांदी का फल का कटोरा, जिसमें मोर और पेड़ के जटिल चित्रण हैं, कैरिकॉम के महासचिव को दिया गया।

संक्षिप्त खबरें

एलजी ने की दिल्ली की सीएम की तारीफ

नई दिल्ली, एजेंसी। इंदिरा गांधी दिल्ली महिला तकनीकी विश्वविद्यालय (आईजीडीटीयूडब्ल्यू) के 7वें दीक्षांत समारोह में दिल्ली के एलजी वीके सक्सेना ने मुख्यमंत्री आतिशी को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि मुझे बहुत खुशी है कि दिल्ली की मुख्यमंत्री एक महिला हैं। बिना किसी का नाम लिए उन्होंने कहा कि मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि वह अपनी पूर्ववर्ती से हजार गुना बेहतर हैं। आपको बता दें कि दिल्ली में उपराज्यपाल और आम आदमी पार्टी की सरकार के बीच टकराव लगातार जारी रहता है। आप के नेता लगातार उपराज्यपाल पर कई बड़े आरोप लगाते रहते हैं। इन सबके बीच उप राज्यपाल का यह बयान कहीं ना कहीं आम आदमी पार्टी नेतृत्व को कई बड़े संकेत दे रहा है। साथ ही साथ उन्होंने इशारों इशारों में अरविंद केजरीवाल पर भी कटाक्ष कर दिया है। अरविंद केजरीवाल और उपराज्यपाल वीके सक्सेना के रिश्ते कभी अच्छे नहीं रहे हैं।

पंजाब में आम आदमी पार्टी की कमान अमन के हाथ

चंडीगढ़, एजेंसी। पंजाब में आम आदमी पार्टी ने प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी अब अमन अरोड़ा के हाथों में सौंप दी है। अमन अरोड़ा के साथ शैरी कलसी उपाध्यक्ष के तौर पर काम करेंगे। पार्टी के नए प्रदेश अध्यक्ष के तौर पर जिम्मेदारी संभालने के बाद पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट शेयर कर दोनों को बधाई दी। मैंने पार्टी अध्यक्ष की जिम्मेदारी अपने दो करीबी साथी कैबिनेट मंत्री अमन अरोड़ा और विधायक अमनशेर सिंह शैरी कलसी को सौंप दी है। उन्होंने आगे लिखा, पार्टी ने फैसला किया है कि अमन अरोड़ा पार्टी अध्यक्ष और शैरी कलसी उपाध्यक्ष के तौर पर काम करेंगे। अपने दोनों साथियों पर पूरा विश्वास है कि वे आने वाले समय में पार्टी और संगठन को पंजाब में और मजबूत करेंगे और नई ऊंचाइयों तक लेकर जाएंगे।

एग्जिट पोल गलत साबित होंगे, महाविकास अघाड़ी दर्ज करेगी बड़ी जीत – संजय राउत

मुंबई, एजेंसी। एग्जिट पोल के रुझानों को शिवसेना–यूबीटी सांसद संजय राउत ने कहा कि जिस ने भी सर्वे किया है वो अपने पास रखे। यह सब फेक एग्जिट पोल है। इसे पैसे देकर करवाया जाता है। महाविकास अघाड़ी बड़ी जीत दर्ज करने जा रही है। उन्होंने कहा कि सारे एग्जिट पोल गलत दिखा रहे है, एमवीए जीत रहा है और हम सरकार बनाने जा रहे है। नतीजे कल सुबह तक आ जाएंगे। हमें विश्वास है कि हम बहुमत हासिल करेंगे। 160–165 सीटें जीतने के लक्ष्य के साथ हमने चुनाव लड़ा है। जयंत पाटिल, बाला साहेब थोराट हम सभी कल बैठे और आकलन किया तो 160 सीटें हम जीत रहे है। सरकार गठन के लिए निर्दलीयों को साथ लाने को लेकर भी चर्चा हुई। सीएम पद को लेकर उन्होंने कहा कि अभी कोई फार्मूला नहीं बना है। हम सब मिलकर मुख्यमंत्री का चेहरा चुनेंगे। अभी कोई फार्मूला तय नहीं हुआ है। एमवीए बैठ कर निर्णय करेगी कि सरकार का नेतृत्व कौन करेगा। शरद पवार, कांग्रेस पार्टी और उद्धव ठाकरे आगे की योजना पर विचार करेंगे। हमें सरकार बनने से कोई नहीं रोक सकता। हमारे 160 लोग चुनकर आ रहे हैं। हमारे 160 विधायक चुनकर आने के बाद विधायक दल की बैठक में इस मुद्दे पर विचार–विमर्श किया जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि महिलाओं ने अगर ज्यादा वोटिंग किया है तो उनका स्वागत करना चाहिए। अगर युवा और महिला वोटिंग के लिए आगे आते है तो उनका स्वागत किया जाना चाहिए।

सीएम नीतीश कुमार ने 8,837 करोड़ रुपए की योजनाओं का दिया तोहफा

पटना, एजेंसी। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने ग्रामीण कार्य विभाग की 8,837.77 करोड़ रुपए लागत की 6,199 योजनाओं

का रिमोट के माध्यम से कार्यारंभ एवं उद्घाटन कर प्रदेश की जनता को बड़ा तोहफा दिया। इसके तहत 6,509.93 करोड़ रुपए की 4,390 योजनाओं का कार्यारंभ तथा 2,327. 84 करोड़ रुपए की 1,809 योजनाओं का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि यह अत्यंत खुशी की बात है कि ग्रामीण कार्य विभाग द्वारा कई पथों एवं पुलों का उद्घाटन के साथ–साथ शिलान्यास किया गया है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में आवागमन और सुगम होगा। उन्होंने विश्वास जताते हुए कहा कि जिन योजनाओं का कार्यारंभ किया गया है, उन सभी पथों एवं पुलों का निर्माण गुणवत्तापूर्ण तरीके से ससमय पूर्ण कर लिया जाएगा।

वैसे सभी पथों एवं पुलों, जिनका उद्घाटन किया जा रहा है, उन सभी पथों का नियमित निरीक्षण करते हुए उनका मेंटेनेंस भी किया जाएगा, जिससे उसकी गुणवत्ता बनी रहे।

मुख्यमंत्री ने ग्रामीण कार्य विभाग के पदाधिकारियों को विभाग के अन्य सभी पथों एवं पुलों की सतत निगरानी करते हुए उनका नियमित मेंटेनेंस भी करने का निर्देश दिया। उद्घाटन की गई योजनाओं के तहत मुख्यमंत्री ग्राम संपर्क योजना अंतर्गत 983 करोड़ रुपए की लागत से 763 पथों एवं 4 पुलों का निर्माण किया गया है।

कांग्रेस हमारी सरकार का हिस्सा नहीं – उमर अब्दुल्ला

जम्मू–कश्मीर, एजेंसी। जम्मू–कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने शुक्रवार को कहा कि मौजूदा केंद्र शासित प्रदेश (यूटी) का दर्जा कुछ मुद्दों को संबोधित करने की उनकी क्षमता को सीमित करता है। उन्होंने कहा कि राजनीतिक कैदियों को जेलों से मुक्त कराने के लिए उन्हें राज्य का दर्जा चाहिए। उमर अब्दुल्ला ने लोगों को जेलों से मुक्त कराने और विभिन्न चिंताओं पर प्रगति करने में इसके महत्व का हवाला देते हुए, राज्य का दर्जा बहाल करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। उमर अब्दुल्ला ने कहा कि पहले दिन से, हम जम्मू–कश्मीर को फिर से राज्य का दर्जा दिलाने की कोशिश कर रहे हैं। कुछ चीजें हैं जो लोग चाहते हैं और हम इसे पूरा नहीं कर सकते क्योंकि यह एक यूटी है। उन्होंने कहा कि महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रस्ताव को खारिज नहीं किया गया था। यह पारित हो गया। एक दरवाजा खुल गया है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि कांग्रेस हमारी सरकार का हिस्सा नहीं है, वे हमें बाहर से समर्थन दे रहे हैं। यह प्रस्ताव लेकर आई है और बीजेपी के अलावा कांग्रेस समेत ज्यादातर विधायकों ने इसे पारित कर दिया है। उन्होंने कहा कि बीजेपी ने कांग्रेस पर निशाना साधा...तो कांग्रेस बेबस हो गई और उन्हें इसे थोड़ा कमजोर करना पड़ा लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। उमर अब्दुल्ला ने किश्तवाड़ में सैनिकों द्वारा नागरिकों पर अत्याचार की हालिया घटना को भी संबोधित किया और जिम्मेदार लोगों के लिए कड़ी सजा की मांग की।

सरकार निर्दोष लोगों की हत्या के खिलाफ आंदोलन का समर्थन करती - सीएम एन बीरेन

इंफाल, एजेंसी। मणिपुर में पिछले कई दिनों से तनाव और अशांति जारी है। इस बीच मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह का बयान सामने आया है, उन्होंने कहा, सरकार निर्दोष लोगों की हत्या

के खिलाफ आंदोलन का समर्थन करती है कुछ गिरोहों ने लोकतांत्रिक आंदोलन के नाम पर मंत्रियों के घरों को लूट लिया और जला दिया। एन बीरेन सिंह ने कहा, शर्मैंने पहले ही कहा था, जो लोग सही मायने में निर्दोष लोगों की हत्याओं के खिलाफ वास्तव में आंदोलन कर रहे हैं, वे वास्तविक हैं, हम उनके आंदोलन का समर्थन करते हैं क्योंकि हर किसी को लोकतांत्रिक तरीके से आंदोलन करने का अधिकार है। बीरेन सिंह ने आगे कहा, लोकतांत्रिक आंदोलन में, कुछ गिरोहों ने मंत्रियों के घरों को लूट लिया, जला दिया और उनकी संपत्तियों को लूट लिया, हमने पहले ही सीसीटीवी के माध्यम से पहचान कर ली है और मुझे यह सार्वजनिक रूप से व्यक्त करने में शर्म आती है कि यह मणिपुर में हो रहा है। यह शर्म की बात है हम कानूनी कार्रवाई करेंगे। मुख्यमंत्री ने पुष्टि की कि वह पहले ही हिंसा की निंदा कर चुके हैं और सरकार ने इसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है। इससे पहले, कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने मणिपुर मुद्दे को सनसनीखेज बनाने की कोशिश के लिए अपनी पार्टी की आलोचना करने वाले भाजपा प्रमुख जेपी नड्डा के पत्र पर पलटवार किया था और दावा किया कि उनका पत्र झूठ से भराश था। जब भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने मणिपुर में हिंसा पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु को लिखे कांग्रेस प्रमुख मल्लिकार्जुन खरगे के पत्र की आलोचना की और पार्टी पर हमला करते हुए कहा कि पार्टी राज्य में जारी तनाव और अशांति के बीच इस मुद्दे को सनसनीखेज बनाने की कोशिश कर रही है। भाजपा प्रमुख ने कांग्रेस पर हमला किया और कहा कि पार्टी राजनीतिक लाभ उठाने और अपने नापाक एजेंडे को बढ़ावा देने के लिए झूठी, गलत और राजनीति से प्रेरित कहानी बना रही है।

उत्तर भारत में वायु प्रदूषण राष्ट्रीय आपातकाल – राहुल

नई दिल्ली, एजेंसी। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने उत्तर भारत में वायु प्रदूषण की स्थिति पर चिंता जताई है। राहुल ने कहा, श्उत्तर भारत में वायु प्रदूषण एक राष्ट्रीय आपातकाल है। यह एक सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट है। यह हमारे बच्चों का भविष्य छीन रहा है। यह बुजुर्गों का दम घोंट रहा है। यह एक पर्यावरणीय और आर्थिक आपदा है। इससे अनगिनत जिंदगियां बर्बाद हो रही हैं। उन्होंने कहा कि सबसे गरीब लोगों को सबसे अधिक परेशानी होती है, वे अपने चारों ओर फैली जहरीली हवा से बच नहीं पाते। परिवार को स्वच्छ हवा के बिना दिक्कत हो रही है, बच्चे बीमार पड़ रहे हैं और लाखों जिंदगियां खत्म हो रही हैं। पर्यटन घट रहा है। हमारी वैश्विक प्रतिष्ठा धूमिल हो रही है। हमें सामूहिक राष्ट्रीय प्रतिक्रिया की जरूरत है। कांग्रेस नेता ने कहा कि जैसे ही कुछ दिनों में संसद की बैठक होगी, सभी सांसदों

को आंखों में जलन और गले में खराश के कारण संकट की याद आ जाएगी। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम एक साथ आएं और चर्चा करें कि भारत इस संकट को हमेशा के लिए कैसे समाप्त कर सकता है। राहुल गांधी ने दावा किया कि प्रदूषण का बादल सैकड़ों किलोमीटर तक फैला हुआ है। इसे साफ करने के लिए सरकारों, कंपनियों, विशेषज्ञों और नागरिकों की ओर से बड़े बदलाव और निर्णायक कार्रवाई की आवश्यकता होगी।

संपादकीय

युवाओं को सशक्त बनाना

विकसित भारत /2047 पहल का लक्ष्य 2047 में अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है। यह परिवर्तनकारी रोडमैप समावेशी विकास, सतत प्रगति और प्रभावी शासन पर जोर देता है। इसके केंद्र में भारत के युवाओं की सक्रिय भागीदारी है, जिन्हें इस बदलाव के प्रमुख चालक माना जाता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनकी भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा, युवा शक्ति बदलाव का वाहक और लाभार्थी दोनों है। वॉयस ऑफ यूथ जैसे मंचों के माध्यम से, यह पहल युवा पीढ़ी की रचनात्मकता, ऊर्जा और विचारों को दिशा देने का प्रयास करती है, उनकी आकांक्षाओं को राष्ट्र के विकास लक्ष्यों के साथ जोड़ती है और नवाचार, प्रगति और आत्मनिर्भरता के भविष्य को बढ़ावा देती है। 18 नवंबर को, केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री मनसुख मंडाविया ने नए सिरे से राष्ट्रीय युवा महोत्सव 2025 की घोषणा की, जिसे अब विकसित भारत युवा नेता संवाद कहा जाता है। संवाद दो प्रमुख उद्देश्यों पर केंद्रित होगा। पहला, राजनीति में नए युवा नेताओं को लाना, माननीय प्रधानमंत्री द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने संबोधन के दौरान गैर–राजनीतिक पृष्ठभूमि वाले 1 लाख युवाओं को इन क्षेत्रों में शामिल करने के आह्वान का जवाब देना। राष्ट्रीय युवा महोत्सव का उद्देश्य नेतृत्व क्षमता वाले युवा प्रतिभाओं की पहचान करना और उन्हें विकसित करना है, ताकि उन्हें माननीय प्रधानमंत्री के समक्ष सीधे विकसित भारत के लिए अपने विचार और दृष्टिकोण साझा करने के लिए एक मंच प्रदान किया जा सके। दूसरा, पारदर्शी और लोकतांत्रिक, योग्यता–आधारित चयन प्रणाली के माध्यम से विकसित भारत के लिए युवाओं का सार्थक योगदान सुनिश्चित करना। यह पहल भारत की प्रगति और विकास को आगे बढ़ाने के लिए अगली पीढ़ी को सशक्त बनाने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। विकसित भारत के लिए युवाओं को एकजुट करना विकसित भारत युवा नेता संवाद – राष्ट्रीय युवा महोत्सव 2025 तीन प्रमुख श्रेणियों में युवा नेताओं के एक गतिशील समूह को एक साथ लाएगा। पहले समूह में हाल ही में शुरू की गई विकसित भारत चुनौती के प्रतिभागी शामिल होंगे। दूसरे समूह में जिला और राज्य स्तरीय युवा महोत्सवों से चुने गए युवा प्रतिभाएँ शामिल होंगी, जो चित्रकला, विज्ञान प्रदर्शनी, सांस्कृतिक प्रदर्शन और भाषण प्रतियोगिताओं जैसे क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा करेंगी। तीसरा समूह उद्यमिता, खेल, कृषि और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में असाधारण युवा आइकन और अग्रणी लोगों को प्रदर्शित करेगा। कुल मिलाकर, राष्ट्रीय आयोजन 2025 में भाग लेने के लिए इन क्षेत्रों से लगभग 3,000 युवाओं का चयन किया जाएगा। विकसित भारत चुनौती विकसित भारत युवा नेता संवाद के हिस्से के रूप में, नए सिरे से तैयार किए गए राष्ट्रीय युवा महोत्सव में रोमांचक विकसित भारत चुनौती शामिल है – एक चार–चरणीय प्रतियोगिता जिसका उद्देश्य युवाओं को भारत के भविष्य को आकार देने में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए प्रेरित करना है। विभिन्न थीम–आधारित राज्य–स्तरीय टीमें 11–12 जनवरी 2025 को राष्ट्रीय युवा महोत्सव में प्रति स्पर्धा करेंगी, और विजेता टीमें भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के समक्ष विकसित भारत के लिए अपने दृष्टिकोण और विचार प्रस्तुत करेंगी। विजन को एक्शन में बदलना विकसित भारत युवा नेता संवाद – राष्ट्रीय युवा महोत्सव 2025 युवाओं, विचार नेताओं और निर्णयकर्ताओं को विचारों के गतिशील आदान–प्रदान के लिए एक साथ लाएगा, जिसका उद्देश्य युवा भारतीयों को विकसित भारत के विजन में योगदान देने के लिए सशक्त बनाना है। मुख्य आकर्षणों में विकसित भारत प्रदर्शनी शामिल है, जिसमें राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों और केंद्रीय मंत्रालयों की युवा–केंद्रित पहलों को दिखाया जाएगाय युवाओं के साथ संवादात्मक संवाद में शामिल राष्ट्रीय और वैश्विक आइकन के साथ प्लेनरी सत्रय और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से भारत की विरासत का उत्सव, जो भारत की प्रगति के साथ–साथ इसकी परंपराओं की जीवंतता को उजागर करता है। आइए युवा विकास में महत्वपूर्ण मील के पत्थर साबित हुई अन्य पहलों पर एक नजर डालें। राष्ट्रीय युवा महोत्सव राष्ट्रीय युवा महोत्सव, जिसे अब विकसित भारत युवा नेता संवाद के रूप में फिर से परिभाषित किया गया है, स्वामी विवेकानंद की जयंती मनाने वाला एक वार्षिक कार्यक्रम है। यह देश भर के युवाओं को अपनी सांस्कृतिक प्रतिभा दिखाने, राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने और सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए एक साथ लाता है। 12 जनवरी, 2024 को, प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने महाराष्ट्र के नासिक में 27वें राष्ट्रीय युवा महोत्सव का उद्घाटन किया। 'विकसित भारत / 2047 – युवा के लिए, युवा के द्वार' थीम वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम में लयबद्ध जिमनास्टिक, मल्लखंब, योगासन और राष्ट्रीय युवा महोत्सव गीत जैसे प्रदर्शन शामिल थे। 1985 से हर साल भारत सरकार 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाती है, इस दिन से शुरू होने वाले सप्ताह को राष्ट्रीय युवा सप्ताह के रूप में मनाया जाता है, जो देश के भविष्य को आकार देने में युवाओं की भूमिका पर और अधिक जोर देता है। 11 अक्टूबर, 2023 को प्रधान मंत्री के कैबिनेट के फैसले के बाद एक स्वायत्त निकाय के रूप में स्थापित मेरा युवा भारत पहल का उद्देश्य युवा विकास के लिए एक परिवर्तनकारी, प्रौद्योगिकी–संचालित मंच बनना है।

लोकसभा सचिवालय में विस्तार राज

आदित्य

अपने दूसरे कार्यकाल से ही नरेंद्र मोदी सरकार ने नीति निर्माण में निरंतरता के लिए शीर्ष सिविल सेवकों को सेवानिवृत्ति के बाद भी बनाए रखा है। सत्ता में वापस आने के कुछ हफ्तों बाद ही नरेंद्र मोदी सरकार ने इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) के प्रमुख तपन कुमार डेका का कार्यकाल बढ़ा दिया। इसके अलावा, सरकार ने अमित खरे और तरुण कपूर को भी पीएम के सलाहकार के रूप में फिर से नियुक्त किया, जिससे मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल में प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) में निरंतरता का एक ठोस संदेश गया, हालाँकि इस बार अन्य दलों के साथ गठबंधन में। 2017 से आयुष मंत्रालय में सचिव राजेश कोटेचा को भी उनकी नियुक्ति के बाद से तीसरा विस्तार मिला। साफ है कि शीर्ष अधिकारियों को विस्तार देने की सरकार की प्रवृत्ति जारी है। वरिष्ठ आईएएस उत्पल कुमार सिंह, जो लोकसभा (सचिवालय) के मौजूदा महासचिव हैं, को कथित तौर पर एक और एक साल का विस्तार दिया गया है। श्री सिंह का कार्यकाल इस महीने समाप्त होने की उम्मीद थी। इसके अलावा, सार्वजनिक उद्यम चयन बोर्ड की अध्यक्ष मल्लिका श्रीनिवासन को सेवानिवृत्त होने से कुछ दिन पहले ही सेवा विस्तार मिला, जिससे उन्हें नवंबर 2025 तक पद पर बने रहने की अनुमति मिली। PESB को चलाने में सुश्री श्रीनिवासन का नेतृत्व महत्वपूर्ण रहा है, और यह विस्तार उनके स्थिर दृष्टिकोण में विश्वास का संकेत देता है। इस बीच, भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास के सामने भी इसी तरह का सवाल मंडरा रहा है, क्योंकि उनका छह साल का कार्यकाल 10 दिसंबर को समाप्त हो रहा है। श्री दास की देखरेख में, आरबीआई ने महामारी सहित प्रमुख आर्थिक बाधाओं को पार किया है, जबकि ब्याज दरों में ढील के आह्वान के बावजूद लगभग दो वर्षों तक स्थिर रखा है। कठिन आर्थिक माहौल के बीच उनकी निरंतरता स्थिरता प्रदान कर सकती है, और जबकि अटकलें विस्तार की ओर इशारा करती हैं, अभी तक कोई आधिकारिक शब्द नहीं है। प्रधान मंत्री मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की अगुवाई वाली कैबिनेट की नियुक्ति समिति इस मामले पर निर्णय लेती है, जबकि आरबीआई और श्री दास दोनों इस मामले पर चुप्पी साधे हुए हैं। इस मामले को और भी पेचीदा बनाते हुए, आरबीआई के डिप्टी गवर्नर माइकल पात्रा का कार्यकाल जनवरी में समाप्त हो रहा है। पर्यवेक्षक इस बात पर सहमत हैं कि नेतृत्व में बदलाव, चाहे श्री दास हों या श्री पात्रा, ब्याज दरों के प्रति आरबीआई के दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकता है, खासकर मुद्रास्फीति पर श्री दास के निरंतर नियंत्रण को देखते हुए। दोनों ही स्थितियों में नेतृत्व की

निरंतरता की आवश्यकता को दर्शाया गया है, लेकिन विस्तार को सेवा नियमों के उल्लंघन के रूप में भी देखा जाता है और यह मनोबल गिराने वाला हो सकता है। आपका क्या कहना है? एमबीए बाबू? नौकरशाही के लिए नारायण मूर्ति का साहसिक उपाय इसलिए, भारत के युवाओं से 70 घंटे के कार्य सप्ताह के आकर्षण को अपनाने का आग्रह करने के बाद, इंफोसिस के सह–संस्थापक एनआर नारायण मूर्ति ने अब भारतीय नौकरशाही की दुनिया पर अपनी नजरें टिकाई हैं। उनका नवीनतम विचार? केवल आजमाए हुए यूपीएससी परीक्षाओं पर निर्भर रहने के बजाय शीर्ष बिजनेस स्कूलों से आईएएस और आईपीएस अधिकारियों की भर्ती करना। क्योंकि, बेशक, भारत के सिविल सेवकों को 2047 तक उस मायावी +50 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने के लिए प्रबंधन मानसिकता में क्रैश कोर्स की आवश्यकता है। श्री मूर्ति की बात दिलचस्प है KPI का पीछा करने, संख्याओं को क्रंच करने और पावरपॉइंट्स का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित नेताओं को लाएं। आखिरकार, अगर कॉर्पोरेट नेतृत्व अरबों डॉलर के उद्यमों को चला सकता है, तो यह शासन के व्यवसाय को थोड़ी कॉर्पोरेट चमक क्यों नहीं दे सकता है? श्री मूर्ति का तर्क है कि जबकि हमारी सरकारी मशीनरी, इसके नौकरशाही दिल को आशीर्वाद दें, यथास्थिति से बंधी हुई है, व्यापारिक नेता महत्वाकांक्षा के लिए तैयार हैं। कल्पना कीजिए – व्यावसायिक योजनाओं वाले बाबू! एक ओर, श्री मूर्ति की टाइमिंग इससे बेहतर नहीं हो सकती थी। जैसा कि श्री मोदी की सरकार आर्थिक सुधार और आधुनिकीकरण पर जोर देती है, श्री मूर्ति का मानना है कि प्रबंधन की एक खुराक चीजों को बदल सकती है क्षेत्र–विशिष्ट प्रबंधन बूट कैंप का विचार आकर्षक लगता है, लेकिन क्या हमारे परंपरावादी बाबू, जो पहले ही यूपीएससी की परीक्षा दे चुके हैं, सहमत होंगे? जबकि श्री मूर्ति के विजन के अपने आकर्षण हैं, कोई भी मदद नहीं कर सकता है लेकिन अनुभवी अधिकारियों को एमबीए की शब्दावली और बैलेंस शीट के लिए अनिच्छा से अपने क्लासिक नौकरशाही शस्त्रागार को छोड़ने की कल्पना कर सकता है। यदि श्री मोदी श्री मूर्ति की सलाह लेने का फैसला करते हैं, तो सिविल सेवा एक अधिक लक्ष्य–उन्मुख मशीन में बदल सकती है – हालांकि इस दौरान कुछ शिकायतें भी होंगी। समोसे और सोशल मीडिया पर तकरार जब शासन की विचित्रताओं की बात आती है, तो हिमाचल प्रदेश और केरल दोनों ही काफी हास्यप्रद लगते हैं। हिमाचल में, बद्दी की एसपी इल्मा अफरोज का मामला अलग है, जो एक ईमानदार आईपीएस अधिकारी हैं, जिन्होंने देश की सेवा करने के लिए संयुक्त राष्ट्र की प्रतिष्ठित नौकरी छोड़ दी प्रतिक्रिया त्वरित थी। विधानसभा में विशेषाधिकार हनन का प्रस्ताव और जबरन छुट्टी। यहाँ, जाहिर है, राजनीतिक संबंधों के पक्ष में नियमों को मोड़ने से इनकार करने पर आपको अनिश्चितकालीन छुट्टी पर भेजा जा सकता है। लेकिन, जब आपके पास मुख्यमंत्री के गायब समोसे की जांच को प्राथमिकता देनी हो, तो मेहनती अधिकारियों को ड्यूटी पर रखना बिल्कुल भी जरूरी नहीं है। इस बीच, केरल के शासन का नाटक हाल ही में समाज पर सामने आया ऑनलाइन विवाद के बाद दो आईएएस अधिकारियों को निलंबित कर दिया गया। यह मामला तब शुरू हुआ जब के. गोपालकृष्णन ने "मल्लू हिंदू ऑफिसर्स" नाम से एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाया जिसमें वरिष्ठ हिंदू आईएएस अधिकारी शामिल थे। ग्रुप को तुरंत हटा दिया गया, लेकिन विवाद अभी सुलग ही रहा था। एक अन्य अधिकारी, एन. प्रशांत ने कई पोस्ट के माध्यम से वरिष्ठ अधिकारी ए. जयतिलक के खिलाफ शिकायतें व्यक्त कीं, जिससे सार्वजनिक रूप से काफी हंगामा हुआ। मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन और मुख्य सचिव शारदा मुरलीधरन ने तुरंत कार्रवाई की, जिससे दोनों अधिकारियों को राहत मिली। एक राज्य ईमानदार अधिकारियों को छुट्टी देने में व्यस्त है और दूसरा बाबुओं के बीच सोशल मीडिया पर झगड़े को शांत करने में, कोई आश्चर्य करता है कि क्या शासन की वास्तविक चुनौतियों को इन विचलनों की तुलना में आधी गंभीरता से लिया जा सकता है। लेकिन जब आप "गायब नमकीन" या दुष्ट व्हाट्सएप ग्रुप से निपट सकते हैं तो कठिन मुद्दों से क्यों निपटें? ऐसा लगता है कि व्यक्तिगत झगड़े और आहत अहंकार आजकल का चलन बन गए हैं।

न कटेंगे न बटेंगे, यदि सिर्फ भारतीय रहेंगे

अतुल

बटेंगे तो कटेंगे इस सियासी नारे ने उत्तर प्रदेश और हरियाणा के बाद महाराष्ट्र और झारखण्ड के चुनावी माहौल में भी खूब सुर्खियां बटोरी हैं। साथ में पीएम मोदी का समर्थक नारा श्एक हैं तो सेफ हैंश ने भी भारतीय राजनीति में अपनी जगह पक्की कर ली है, जिसे राहुल गांधी अपने चिरपरिचित अंदाज में बीजेपी की उपलब्धि बनाने पर तुले हुए हैं। एक बात तो साफ है कि यह दोनों ही नारे सिर्फ चुनावों तक ही सीमित नहीं रहने वाले हैं। इनका कालजयी बनना भी निश्चित है। सालों साल, चुनाव हों या न हो, नेता हो या आम इंसान, जुबान पर यह नारे जरूर रहेंगे, और तब इनका शोर अधिक सुनने को मिलेगा जब बात जाति, धर्म की राजनीति की होगी। क्या हम कभी एक हो पाएंगे? क्या हम कभी सिर्फ एक भारतीय के रूप में पहचाने जाएंगे? क्या हम ठाकुर, ब्राह्मण, अजा, अजजा या हिन्दू–मुसलमान के फेर से बाहर निकल पाएंगे? विश्वगुरु बनने का जो सियासी ख्वाब हमें दिखाया गया है, क्या वह इसी बंटवारे के रास्ते पर चलकर पूरा होगा? ऐसे कई अन्य सवाल हैं जिनका जवाब हमारे अंदरूनी बंटवारे की मजबूत जड़ों के कारण शायद कभी न मिले। यह ऐसा समय है जब भारत दुनिया की बड़ी आर्थिक महाशक्ति बनने की राह पर है। आईएमएफ का अनुमान है कि 2025 तक भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगा। वहीं 2027 तक भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगी। वैश्विक रूप से निखरती भारत की छवि, बढ़ता निवेश, और यहाँ की युवा शक्ति के बूते आज एक देश के रूप में हमने ब्रिटेन को पीछे छोड़ दिया है, और जापान, जर्मनी या अमेरिका जैसे देशों की बराबरी में आ कर खड़े हो गए हैं। लेकिन अफसोस कि एक भारतीय के रूप में हम एक नहीं हो पाए हैं। एक भारतीय के रूप में एकता न होने का दोष सिर्फ राजनीति को भी नहीं दिया जा सकता, क्योंकि राजनीति तो लोगों को उन मामलों में भाग लेने से रोकने के लिए कहती है जो उनसे सीधे तौर पर सबंध रखते हैं। एक भारतीय के रूप में हमारी अखंडता हमारे अपने विवेक और देश व देश के नागरिकों के प्रति संवेदनशीलता पर निर्भर करती है। राजनीति तो अपना योगदान पहले हिन्दू–मुस्लिम में देगी, फिर हिन्दू में भी जातियां बांटकर, ऊंच–नीच कर के देती रहेगी। हालांकि यह बात सिर्फ उन आम लोगों को ही समझने की जरुरत है जो राजनीतिक नारों के आवेश में सोचने–समझने की शक्ति खो बैठते हैं। हम विश्व में अनेकता में एकता के लिए जाने जाते हैं। हालाँकि पिछले कुछ सालों में देश की इस छवि में धुंधलापन आया है। खुद को नागरिकों का हितैषी दर्शाने के चक्कर में राजनीतिक पार्टियां धर्म और बंटवारे की बातें अब भरे मंच पर गर्व से कहती नजर आती हैं। सोचने की जरुरत है कि यदि हम सब सिर्फ एक भारतीय के रूप में एक हो जाते हैं तो क्या कभी बटने, कटने या सेफ रहने का सवाल पैदा होगा?

क्या राजनेताओं को हिन्दुओं को हिन्दुओं में ही बांटने का स्वाद लेने का मौका मिलेगा? नहीं, जब लोग सिर्फ भारतीय बने रहने के लिए जागरूक होंगे तो न धर्म की लड़ाई बचेगी न ही जात–पात की और यह वह समय होगा जब हम सही मायने में वैश्विक लीडर बनने की राह पर होंगे। वो किसी ने कहा है न कि देश में एक मंदिर बनाने से क्या होगा, बनाना है तो पूरे देश को ही मंदिर बनाओ। फिर अंत में यह भी ध्यान रखने की जरुरत है कि जब तक हम एक नहीं होंगे, हम घर में तो कमजोर रहेंगे ही साथ ही विदेशी ताकतें भी हम पर हावी होती रहेंगी. चीन, पाकिस्तान या बांग्लादेश इसका साक्षात् उदाहरण हैं।

पाकिस्तान-बांग्लादेश के बीच संबंधों में बदलाव

अजय

53 साल पहले आजादी मिलने के बाद पहली बार बांग्लादेश ने पिछले हफ्ते पाकिस्तान से आने वाले जहाज को अपने बंदरगाह पर आने की अनुमति दी। यह दो देशों के बीच पहला सीधा समुद्री संपर्क था, जो खून–खराबे और गहरे अविश्वास के इतिहास से जुड़े हुए हैं। मालवाहक जहाज, जो बांग्लादेश के कुछ सबसे महत्वपूर्ण उद्योगों जैसे कि परिधान निर्माण के लिए खाद्य पदार्थ और कच्चा माल लेकर आया था, कराची से चटगाँव के लिए रवाना हुआ। इससे पहले, पाकिस्तान के जहाजों को बांग्लादेश की यात्रा करने से पहले दूसरे देश में रुकना पड़ता था। इस समुद्री गलियारे की स्थापना नोबेल पुरस्कार विजेता मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली ढाका में अंतरिम सरकार के तहत पाकिस्तान के प्रति बांग्लादेश के दृष्टिकोण में बदलावों की श्रृंखला में नवीनतम है। श्री यूनुस ने सितंबर में संयुक्त राष्ट्र महासभा के हाशिये पर न्यूयॉर्क में पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ से मुलाकात की थी और कहा था कि वह देशों के बीच संबंधों को बेहतर बनाना चाहते हैं। तब से, बांग्लादेश ने पाकिस्तानी सामानों पर पहले से लगे कड़े आयात प्रतिबंध हटा दिए हैं। पाकिस्तान बांग्लादेश को 40,000 राउंड गोला–बारूद, आरडीएक्स, प्रोजेक्टाइल और अन्य सैन्य हार्डवेयर की आपूर्ति करने की प्रक्रिया में भी है। यह सब भारत के लिए चिंता का विषय है। बांग्लादेश में शेख हसीना वाजेद के 15 साल के शासन के दौरान ढाका और नई दिल्ली ने एक–दूसरे के मूल हितों के बारे में गहरी समझ विकसित की थी। पाकिस्तान के प्रति साझा अविश्वास उनके संबंधों में एक महत्वपूर्ण कड़ी थी। लेकिन भारत यह नहीं भूला है कि सुश्री वाजेद के कार्यकाल से पहले, साझा भारत विरोधी भावनाओं ने पाकिस्तान और बांग्लादेश के राजनीतिक और सैन्य अभिजात वर्ग के कुछ हिस्सों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया था। सुश्री वाजेद की सरकार को उखाड़ फेंकने के बाद, उस इतिहास के खुद को दोहराने का जोखिम वास्तविक है। विशेष रूप से दो कारक इसे भारत–बांग्लादेश संबंधों के लिए एक खतरनाक समय बनाते हैं। पहला, बांग्लादेश में भारत विरोधी भावनाएं दशकों में अपने उच्चतम स्तर पर हैं, और नई दिल्ली को व्यापक रूप से सुश्री वाजेद का समर्थन करते हुए देखा गया है, जब उनकी सरकार लोकतंत्र से दूर होती जा रही थी। यह कि भारत उन्हें शरण देना जारी रखता है, मदद नहीं करता है। इसी तरह, बांग्लादेश में जमात–ए–इस्लामी जैसी इस्लामी राजनीतिक ताकतों के बढ़ते प्रभाव से उन लोगों को सामाजिक वैधता मिलने का खतरा है जो पाकिस्तान को भारत को चुनौती देने के लिए संभावित सहयोगी के रूप में देखते हैं। यह सब भारत के लिए सुरक्षा संबंधी चिंताएँ भी पैदा कर सकता हैरू अतीत में पाकिस्तानी हथियार और गोला–बारूद बांग्लादेश के जरिए भारत के पूर्वोत्तर में विद्रोहियों तक पहुँच चुके हैं। नई दिल्ली में कई लोगों ने सोचा था कि भारत के पास श्री यूनुस के नेतृत्व में बांग्लादेश के साथ मधुर संबंधों को फिर से बनाने का मौका था। क्या वह जहाज रवाना हो गया है?

बॉर्डर–गावस्कर ट्रॉफी और टीम इंडिया की समस्याएं

विनोद

भारत में क्रिकेट प्रेमी आज से ही सुबह जल्दी उठना शुरू कर देंगे। ऐसा इसलिए क्योंकि ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच सबसे ज़्यादा प्रतिस्पर्धी और रोमांचक टेस्ट मैचों की सीरीज बॉर्डर–गावस्कर ट्रॉफी आज से पर्थ में शुरू हो रही है। भारत उन दुर्लभ एशियाई टीमों में से एक है जिसने ऑस्ट्रेलिया में खेलते हुए सफलता का स्वाद चखा है। भारत ने 2018–19 में ऑस्ट्रेलिया को ऑस्ट्रेलिया में हराया थाय उन्होंने 2020–21 में भी अपनी सफलता को दोहराया। लेकिन इस भारतीय टीम के कंधों पर कई कमियाँ हैं। भारत को न्यूजीलैंड ने अपने घरेलू मैदान पर हरा दिया, जिससे टीम के बारे में कई असहज सवाल उठे। पहले टेस्ट में भी भारत की टीम कमजोर होगी, क्योंकि टेस्ट कप्तान रोहित शर्मा और गेंदबाज मोहम्मद शमी एक या उससे ज़्यादा टेस्ट से बाहर हो गए हैं। भारत के कुछ स्टार बल्लेबाज – खघस तौर पर विराट कोहली और केएल राहुल – फॉर्म में संघर्ष कर रहे हैं। भारतीय गेंदबाजी आक्रमण में दम और अनुभव की कमी नजर आ रही है, सिर्फ जसप्रीत बुमराह ही इसका अपवाद हैं। हाल के दिनों में ऑस्ट्रेलिया में अपने गौरव को दोहराने के लिए भारतीयों को मानसिक दृढ़ता और साहस की आवश्यकता होगी। यह न केवल भारत के युवा क्रिकेटरों के लिए बल्कि कोचिंग स्टाफ के लिए भी एक परीक्षा होगी, जिसने गौतम गंभीर के नेतृत्व में सफलता से अधिक असफलता देखी है।

श्रीलंका की नई सरकार के लिए हनीमून वर्ष

ललित

भाई–भतीजावाद, भ्रष्टाचार और भयावह आर्थिक संकट से तंग आकर और अपने इतिहास में पहली बार, श्रीलंका के नागरिकों ने पिछले सप्ताह एक बड़े पैमाने पर अज्ञात राजनीतिक दल, नेशनल पीपुल्स पावर (एनपीपी) को अपने संसद में दो–तिहाई बहुमत से जीत दिलाई। यह आकस्मिक मतदान एनपीपी के नेता, मार्क्सवादी –लेनिनवादी –कम्युनिस्ट जनता विमुक्ति पेरामुना (जेवीपी) के अनुरा कुमारा दिसानायके के देश के नए राष्ट्रपति चुने जाने के बमुश्किल दो महीने बाद हुआ। हालांकि पिछले सप्ताह एनपीपी की संसदीय जीत कुछ हद तक पूर्वानुमानित थी, लेकिन बहुत कम लोगों ने ऐसी शानदार जीत की उम्मीद की थी। इसने शक्तिशाली राजपक्षे परिवार और अति आत्मविश्वासी विपक्षी नेता सजित प्रेमदासा, जो एक पूर्व राष्ट्रपति के बेटे भी हैं, जैसे राजनीतिक वंशों की हार सुनिश्चित की। यहां तक कि राजनीतिक दिग्गज रानिल विक्रमसिंघे, जिन्होंने पूर्व राष्ट्रपति के रूप में, पिछले दो वर्षों में कम से कम कर्ज में डूबे देश को सुधार के रास्ते पर ला खड़ा किया था, को भी बाहर का रास्ता दिखा दिया गया। एनपीपी कार्यकर्ताओं, शिक्षाविदों और डॉक्टरों का एक समूह अब 225 सदस्यीय संसद में 159 सीटों पर कब्जा करेगा। कई मायनों में, एनपीपी की जीत कोई साधारण जीत नहीं है। 22 मंत्रियों की एक छोटी सी कैबिनेट है। पिछली कैबिनेट में 50 से ज़्यादा कैबिनेट मंत्री और राज्य मंत्री थे। कुल 159 सांसदों में से 145 राजनीति में नए हैं और 20 महिलाएँ हैं। हालाँकि, सबसे उल्लेखनीय उपलब्धि यह है कि श्रीलंका के तमिल–हिंदू बहुल उत्तरी प्रांत में एनपीपी ने कैसा प्रदर्शन किया। राष्ट्रपति दिसानायके की जेवीपी का खूनी और उतार–चढ़ाव भरा अतीत रहा है। इसने दो विद्रोह भड़काए थे, जिसमें हजारों लोग मारे गए थे। जेवीपी ने श्रीलंका के तमिल–बहुल उत्तरी और पूर्वी प्रांतों को अधिक स्वायत्तता देने के सभी प्रयासों को लगातार खारिज किया है, जैसे कि 1987 में भारत द्वारा लिखित श्रीलंकाई संविधान में 13वाँ संशोधन। लेकिन स्वायत्तता से ज़्यादा, श्रीलंकाई तमिल दूसरे मुद्दों को लेकर नाराज हैं। विनाशकारी गृहयुद्ध की समाप्ति के 15 साल बाद भी, श्रीलंकाई सेना अपने प्रांतों में भूमि पर कब्जा करना जारी रखे हुए है। स्थानीय पुलिस भी अभी भी कोलंबो में केंद्र सरकार को रिपोर्ट करती है। चूंकि श्री दिसानायके ने सितंबर में राष्ट्रपति बनने से पहले तमिल मांगों का कोई संदर्भ नहीं दिया था, इसलिए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पिछले सप्ताह के आकस्मिक चुनाव में भाग लेने वाले 690 दलों में से उनकी श्रटच्छच्च तमिल हृदयभूमि में दिल जीतने वाली आखिरी पार्टी होगी। और फिर भी, ठीक यही हुआ। जाफना में हाल ही में एक रैली में और अपने सुरक्षा दल की नाराजगी के बावजूद, श्री दिसानायके ने निडरता से तमिल दर्शकों के साथ घुलमिल गए और कब्जाई गई भूमि वापस करने का वादा किया। इसका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। एनपीपी पारंपरिक रूप से कट्टरपंथी तमिल गढ़ जाफना और वन्नी में जीतने वाली पहली सिंहली–बौद्ध पार्टी बन गई, जहां कभी आतंकवादी समूह, लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम का मुख्यालय हुआ करता था। जाफना के अर्थशास्त्री अहिलन कादिरगामर कहते हैं, ष्उत्तर में एनपीपी की जीत ऐतिहासिक है। पिछले कुछ सालों में, तमिल नेशनल अलायंस (कोलंबो में संसदीय दल), जो वास्तव में अलगाववादी तमिल टाइगर्स का राजनीतिक मुखपत्र था, ने कोई समाधान नहीं दिया। इसके बजाय, वे पश्चिमी अभिनेताओं की पैरवी करते रहे और तमिल प्रवासी टीएनए को सहारा देने के लिए उसमें पैसा डालते रहे। अलगाव बढ़ता गया। लोग नाराज थे, उनका विश्वास खत्म हो गया। और वे दिसानायके की ओर मुड़े। कोलंबो की राष्ट्रीय शांति परिषद (एनपीसी) के निदेशक, जेहान परेरा, उत्तर में एनपीपी की अभूतपूर्व जीत के लिए अन्य कारकों की ओर इशारा करते हैं। वे कहते हैं, ष्तमिलों ने एनपीपी को वोट दिया क्योंकि वे देखते हैं कि देश के बाकी लोग इससे कितने खुश हैं, और उन्हें लगा कि वे भी इस पर भरोसा कर सकते हैं।ष लेकिन वे चेतावनी देते हैं कि एनपीपी को अब उस विश्वास का अच्छा इस्तेमाल करना चाहिए। ष्नई सरकार के पास बहुमत है, लेकिन उसे एकतरफा काम नहीं करना चाहिए। अब संसद में उसके अपने अल्पसंख्यक तमिल और मुस्लिम हैं। और चूंकि ये सांसद खुद जेवीपीध एनपीपी के जनादेश के तहत आए हैं, इसलिए उनके लिए सरकार को बाधित करना कठिन होगा। श्रीलंका के सिंहली बहुसंख्यकों के लिए अपने अल्पसंख्यकों की तरह सोचना बहुत कठिन है।

इसलिए, जब जातीय संबंधों की बात आती है, तो बाद वाले से परामर्श किया जाना चाहिए, डॉ परेरा ने कहा। हालांकि, अल्पसंख्यक संकट, या यहां तक कि भारत के साथ संबंध (जिनके सुरक्षा हितों की एनपीपी सरकार कहती है कि वह रक्षा करेगी) अभी कोलंबो में मुख्य मुद्दे नहीं हैं। एक के लिए, स्थानिक भ्रष्टाचार है, जिसने 2022 में विनाशकारी आर्थिक मंदी को जन्म दिया। राष्ट्रपति दिसानायके ने इसे समाप्त करने की शपथ ली है। लेकिन किसी भी दक्षिण एशिया पर्यवेक्षक के लिए, भ्रष्टाचार असीमित शक्ति का उप–उत्पाद है और एक अंतर्निहित दोष–रेखा है जिसे मिटाया नहीं जा सकता है। तो जब अन्य विफल हो गए हैं, तो श्री दिसानायके की बड़े पैमाने पर अनुभवहीन सरकार कैसे सफल होगी? डॉ परेरा कहते हैं, ष्मैं सहमत हूं कि भ्रष्टाचार हर स्तर पर समाया हुआ है।

लेकिन पिछले 40 वर्षों में, जेवीपी नेताओं ने एक निश्चित तपस्वी गुण का प्रदर्शन किया है। वे सादगी से कपड़े पहनते हैं और दिखावटी जीवन नहीं जीते। मुझे पूरा भरोसा है कि जेवीपी समूह के मूल सिद्धांत एनपीपी और पूरे श्रीलंकाई समाज में व्याप्त होंगे। हर कोई जानता है कि इस सरकार को खराब स्थिति विरासत में मिली है और उन्हें अपने काम के लिए समय मिलेगा। सुधारों को छोड़ दिया गया।

दूसरे की पीड़ा को मुखरित करना एक संत पत्रकार का काम है - देवी प्रसाद गुप्त

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन (लखनऊ मंडल) की समन्वय बैठक शनिवार को शारदा इंस्टीट्यूट, लखनऊ के सभागार में संपन्न हुई। मुख्य अतिथि एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष देवी प्रसाद गुप्ता ने संगठन को मजबूत बनाने के लिए परस्पर समन्वय स्थापित करने हेतु प्रेरित करते हुए कहा कि समन्वय के पांच सूत्र सत्य ,सेवा ,संयम ,सह अस्तित्व सहकार पर अमल करें। उन्होंने बताया कि जो संगठन बूथ तक है, वह ज्यादा ताकतवर है। कहा कि हमने पत्रकार की भरपूर सहायता की।

पीड़ा का अयाची साझीदार पत्रकार है। दूसरे की पीड़ा को मुखरित करना एक संत का काम है। जहाँ सत्य की रक्षा होगी, वहीं हमारी कलम चलेगी। झूठ से तालमेल हमारा कभी हो नहीं सकता। बताया कि चरित्र के संकट को साहित्य दूर कर सकता है।कहा कि नरेंद्र मोहन, कुलदीप नैयर, अरुण शौरी, राम नाथ गोयंका ने आपातकाल में बड़ा योगदान किया। भारत का चित्र और चरित्र ठीक करने के लिए यत्न करना है। गांव बढ़ेगा तो देश बढ़ेगा।

बैठक में विशिष्ट अतिथि ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन (उत्तर प्रदेश) के प्रांतीय महासचिव डॉ. कृष्ण गोपाल गुप्ता ने कहा कि ग्रामीण पत्रकारिता की डगर मुश्किलों से भरी है। ग्रामीण क्षेत्रों की चुनौतियाँ नहीं बदली। जोखिम भरा है।स्थाई समिति की बैठक में जिले का प्रतिनिधि उपस्थित रहता है। सच्चाई का साथ दें। समाज का साथ मिलेगा। ग्रामीण पत्रकार आज भी आइना दिखाता है। प्राध्यापक विवेक मिश्र ने कहा कि ग्रामीण पत्रकारिता की चुनौतियाँ बहुत हैं। साहस और फॉलो अप बहुत जरूरी है। पत्रकारिता आपको जीरो से हीरो बना देती है। पत्रकार को गुट बाजी से बचना चाहिए। संघे शक्ति कलौ युगे। कलयुग में संगठन ही शक्ति है। प्रवक्ता अम्बरीष कुमार सक्सेना ने पत्रकार उत्पीड़न की घटनाओं व जिला पत्रकार स्थाई समितियों के गठन के बारे में चर्चा की। उन्होंने कहा कि सकरात्मक पत्रकारिता से ही देश और समाज का कल्याण किया जा सकता है। बैठक में लखनऊ मंडल के जिला अध्यक्षों ने संगठन की गतिविधियों पर चर्चा की तथा संगठन को मजबूत बनाने के लिए आगामी योजनाओं पर विचार विमर्श किया। बैठक का संचालन करते हुए लखनऊ मंडल के अध्यक्ष व एसोसिएशन के कर्नाटक प्रभारी, अतुल कपूर ने कहा कि संस्थापक स्व० बाबू बालेश्वर लाल जी ने 8 अगस्त 1982 को ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन की नींव रखी थी !हमारा संगठन पत्रकारिता को एक पवित्र धागे से से बाँधने का कार्य लगातार करने में हमेशा प्रयासरत रहा है। जिला महामंत्री आर एल पांडेय ने आये हुए सभी अभ्यागतों, पत्रकारों एवं प्रशिक्षार्थियों के प्रति आभार व्यक्त किया। बैठक में असिस्टेंट प्रोफेसर अंजली सोनी, हरदोई के जिला अध्यक्ष अखिलेश सिंह, जिला महामंत्री रजनीश सिंह,रायबरेली के जिला उपाध्यक्ष सचिन तिवारी, देव तिवारी, लखनऊ के जिला अध्यक्ष अभिषेक श्रीवास्तव,उपाध्यक्ष लक्ष्मी कांत मिश्र, हरि शरण दुबे, धर्मेंद्र, उत्कर्ष सिंह, फुरकान अली, इंद्रेश, दिलीप रावत उन्नाव के जिला अध्यक्ष सुयश बाजपेई आदि ने सहभागिता की।

जेवर नगदी लेकर छात्रा हुई लापता, एक आरोपी युवक के विरुद्ध पुलिस ने केस किया दर्ज

अयोध्या (डीकेयू लाइव ब्यूरो चीफ) सुरेंद्र कुमार। बीकापुर अयोध्या नगर पंचायत क्षेत्र की निवासी स्नातक की छात्रा घर में रखी नगदी, जेवर, शैक्षिक प्रमाण पत्र लेकर अचानक लापता हो गई। लापता छात्रा के बाबा की तहरीर पर कोतवाली पुलिस ने गैर समुदाय के अयोध्या शहर निवासी एक आरोपी छात्र के विरुद्ध अगवा करने की धारा में अभियोग पंजीकृत किया है। पीड़ित बाबा द्वारा कोतवाली में गुरुवार को दी गई तहरीर के मुताबिक वह थल सेना से रिटायर्ड अधिकारी है। उनकी करीब 20 वर्षीय नातिन बीएससी द्वितीय वर्ष की छात्रा है।

आरोप है कि अयोध्या शहर के राम जी समोसा के निकट का निवासी आरोपी युवक आलोक यादव उनकी नातिन के साथ पढ़ाई करता था। और फोन के जरिए उनकी नातिन से बातचीत भी करता था। बताया कि 20 नवंबर को रात करीब 10 से 11 बजे के बीच आलोक उनकी नातिन को बहला फुसला कर भाग ले गया है। मामला अलग–अलग समुदाय का होने के चलते तहरीर मिलने के बाद हरकत में आई कोतवाली पुलिस द्वारा रिपोर्ट दर्ज करके तलाश शुरू की गई है।

हिंदुस्तान बाल विद्या मंदिर इंटर कालेज में बाल मेला, आर्ट एवं क्राफ्ट प्रदर्शनी आयोजित की गई

मृत्युंजय प्रताप सिंह

लखनऊ। हिन्दुस्तान बाल विद्या मंदिर इण्टर कालेज, न्यू हैदरगंज लखनऊ में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिन के पखवारे में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की अंतिम कड़ी में एक भव्य बाल मेले का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन प्रातः 10:00 बजे उपविजेता माननीय अंजनी कुमार श्रीवास्तव एवं क्षेत्रीय पार्षद मा० श्रीमती रजनी गुप्ता ने फीता काटकर किया। विद्यालय के प्रबंधक डॉ० एच०एन०मिश्र ने माल्यार्पण एवं अंगवस्त्र भेंटकर मुख्य अतिथियों को सम्मानित किया। विद्यालय की ओर से सत्र 2023–24 में हाईस्कूल एवं इण्टर में अधिक अंक पाने वाले छात्र छात्राओं को नकद पुरुस्कार प्रदान किया। कला, विज्ञान एवं गृहविज्ञान की गैलरी को संजोने में विज्ञान एवं इतिहास के अध्यापक गौरव मिश्रा, अखिलेश विश्वकर्मा, नेहा साहू, रोमा गुप्ता, गृहविज्ञान एवं क्राफ्ट की अध्यापिका तहसीन फातिमा, नाजरीन, आरती वर्मा, मुवीना, व मुस्कान खान ने विशेष योगदान दिया। कला प्रदर्शनी का नेतृत्व अध्यापक रमेश कुमार जी ने किया, जिनके निर्देशन में अध्यापिका साजिया खान, मीनू श्रीवास्तव, प्रियंका साहू एवं आयशा बानो जी ने नन्हें–मुन्नों की गैलरी को संजोया। इसे संरक्षकों ने खूब सराहा। सभी छात्र–छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों और लजीज व्यंजनों का लुत्फ लेते हुए कार्यक्रम को सम्पन्न किया। विद्यालय के प्रबंधक डॉ०एच०एन०मिश्र जी ने मेले के सफल आयोजन के लिए प्रधानाचार्य,अध्यापक–अध्यापिकाओं व छात्र–छात्राओं को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम के समापन की घोषणा की।

अयोध्या महोत्सव मे आयोजित कन्या पूजन को वैश्विक पटल पर स्थापित करने का संकल्प - कौशल किशोर

(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ)

अयोध्या। अयोध्या महोत्सव में कन्या पूजन को वैश्विक पटल पर स्थापित करने के लिए एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई।इस बैठक में मुख्य अतिथि प्रांत प्रचारक कौशल किशोर और बैठक की अध्यक्षता महापौर गिरीशपति त्रिपाठी ने की।इस तैयारी बैठक में विशिष्ट अतिथियों में जिलाध्यक्ष भाजपा संजीव सिंह, बावन मंदिर पीठाधीश्वर वैदेही वल्लभ शरण, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य भाजपा शक्ति सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि। रोहित सिंह, महानगर संघ चालक डॉ विक्रमा प्रसाद पांडेय, महानगर प्रचारक सुदीप,सहकारी बैंक सभापति धर्मेंद्र सिंह, मनूचा महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ मंजूषा मिश्रा डॉ अजय मोहन श्रीवास्तव,चंद्रबली सिंह,मनोरमा साहू,अर्चना गोस्वामी,नीलम मधयान,सुषमा गुप्ता,अनुराधा सिंह,अजय सिंह,डॉ रेनू वर्मा, के के त्रिपाठी, अनूप मेहरोत्रा सहित कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।बैठक में मुख्य अतिथि तैयरियों की जानकारी प्रस्तुत की।न्यास अध्यक्ष हरीश कुमार श्रीवास्तव ने न्यास द्वारा आयोजित अयोध्या महोत्सव में बनने जा रहे वर्ल्ड रिकॉर्ड की समस्त जानकारी प्रस्तुत करते हुए बताया कि अरुण द्विवेदी के संयोजन में दूरदूरिया पूजन और ऋचा उपाध्याय के संयोजन में कन्या पूजन का आयोजन किया जाएगा स इस हेतु उपसमितियों का गठन कर दिया गया है स जिनके माध्यम से विभिन सामाजिक संस्थाओं विद्यालयों एवं महाविद्यालय से संपर्क कर उन्हें इस वर्ल्ड रिकॉर्ड में सम्मिलित किया जाएगा स तैयरियों की जानकारी लेने के पश्चात् राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के प्रान्त प्रचारक कौशल किशोर जी न्यास के पदाधिकारियों एवं समाज के गणमान्य नागरिकों को सम्बोधित करते हुए

कहा कि विश्व रिकॉर्ड के इस कीर्तिमान को प्राप्त करने के लिए कार्य कर्ताओं को संकल्प लेना होगा और उसी के अनुरूप प्रयास करना होगा।निश्चय ही दूरदूरिया पूजन एवं कन्या पूजन अध्यातिमकता के साथ अपनी सांस्कृतिक विरासत के जीवंत उदाहरण को प्रस्तुत करते हैं तथा सामाजिक समरसता का संदेश देते हैं।समाज के प्रत्येक वर्ग को एक साथ मिलकर इस अभियान को सफल बनाना होगा और न्यास के प्रत्येक सदस्य को एक टीम के रूप में कार्य करना होगा जिससे एक साथ दो विश्व कीर्तमान अयोध्या महोत्सव में अयोध्या के नाम दर्ज हो सकेगा स जिला अध्यक्ष भाजपा ने अपने संबोधन में सभी को संबोधित करते हुए कन्या पूजन के विश्व रिकॉर्ड के सापेक्ष 10000 का लक्ष्य और दुदुरिया पूजन के सापेक्ष 7000 के लक्ष्य के हिसाब से कार्य करने हेतु सभी का मार्गदर्शन किया।

महोत्सव न्यास के वरिष्ठ संयोजक महापौत्र मं गिरीशपति त्रिपाठी ने अयोध्या नगर निगम द्वारा सम्पूर्ण सहयोग का आश्वासन देते हुए कहा कि अयोध्या के विकास के लिए योगी सरकार ने कोई कसर नहीं छोड़ी है हम सब का दायित्व है कि हम इस अवसर पर अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें स अयोध्या महोत्सव न्यास की इस पहल में हम सभी को मिलकर कार्य करना होगा और दो वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाना होगा।महोत्सव के संयोजक शक्ति सिंह ने आये हुए सभी अतिथियों का आभार प्रकट किया स न्यास के प्रवक्ता श्री प्रकाश पाठक ने बताया की 12 दिसम्बर को अयोध्या मैराथन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें दो वर्ग होंगे एक फूल मैरथान जो हनुमानगढ़ी सहादतगंज से शुरु होकर साकेत महाविद्यालय पर समाप्त होगी दूसरी हाफ मैराथन जो आँख के अस्पताल रीडगंज पर समाप्त होगी।जिसमे निःशुल्क प्रवेश के साथ नगद पुरस्कार राशि रखी गई है।जिसके संयोजक रेगन सिंह चौधरी को बनाया गया है।बैठक में न्यास के प्रबंधक आकाश अग्रवाल, प्रबंध निदेशक नाहीद कैफ, संगठन महासचिव अरुण द्विवेदी, महासचिव ऋचा उपाध्यक्ष, वरिष्ठ उपाध्यक्ष विजय यादव,उपाध्यक्ष रवि चौधरी,गृजेश त्रिपाठी,संयुक्त सचिव बृजेश ओझा,कार्यक्रम सचिव उज्ज्वल चौहान, उपाध्यक्ष मोहित मिश्रा,भूपेंद्र प्रताप सिंह,कोषाध्यक्ष रेगन सिंह चौहान,संगठन सचिव जनार्दन पाण्डेय,प्रचार सचिव गौतम सिंह, प्रभारी सूर्यांश चोपड़ा,पूजा अरोड़ा ,अवनीश सिंह, आदि उपस्थित रहे।

जिला जज ने किया दो दिवसीय के कैंप का शुभारम्भ

(डाक्टर अजय तिवारी जिला संवाददाता)

अयोध्या। जिला न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, रणंजय कुमार वर्मा के निर्देशन मे अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीशध्सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अनिल कुमार वर्मा के निर्देश पर श्री श्री कालेज आफ आयुर्वेदिक साइंस एण्ड रिसर्च संस्थान द्वारा शनिवार से कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अयोध्या पर दो दिवसीय कैंप का आयोजन किया गया हैं।जनपद न्यायाधीशध अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अयोध्या द्वारा चिकित्सा कैम्प का शुभारम्भ अपने विश्राम कक्ष में किया गया।इस मौके पर अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश अशोक

कुमार दुबे, मोहिन्दर कुमार, प्रेम प्रकाश, अनिल कुमार वर्मा, नूरी अंसार, प्रदीप कुमार सिंह, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट अंशुमाली पाण्डेय आदि उपस्थित रहे। उक्त कैंप डा० शाम्भवी प्रियदर्शनी व प्रियंका त्रिपाठी द्वारा जनपद न्यायालय के न्यायिक अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण की शुगर, बी०पी० एवं नाड़ी की जांच की गयी तथा रोगो के निवारण हेतु उनके दिनचर्या, खान पान व प्राणायाम के संबंध में जानकारी दी गयी।

1 जनवरी 2025 को 18 वर्ष पूरा करने वाले युवाओं को वोटर बनने का सुनहरा मौका

ब्यूरो प्रमुख

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। मतदाता सूची विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण अभियान की कड़ी मे स्वीप कार्यक्रम के अन्तर्गत निर्वाचन साक्षरता क्लब सहकारी पीजी कालेज मेहरांवा द्वारा मतदाता पंजीकरण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसके माध्यम से आगामी 01 जनवरी 2025 को 18 वर्ष पूरा करने वाले सभी छात्र छात्राओं का नाम मतदाता सूची मे पंजीकृत कराने हेतु जागरूक किया गया। इस अवसर पर छात्र छात्राओं को वोटर बनने हेतु फार्म छरू प्रदान किया गया तथा उनके मोबाइल मे वोटर हेल्पलाइन ऐप डाउनलोड कराया गया। मतदाता बनने व अन्य लोगों को वोटर बनाने हेतु प्रेरित करने के लिए संकल्प दिलाया गया। इस अवसर पर पूर्वांचल विश्वविधालय के एनएसएस समन्वयक डा राज बहादुर यादव ने कहा कि विश्वविद्यालय से सम्बन्धित लगभग सौ से अधिक महाविद्यालयो मे स्थित राष्ट्रीय सेवा योजना छै के माध्यम से मतदाता जागरूकता कार्यक्रम चल रहा है । उन्होंने कहा कि 18 वर्ष पूर्ण करने वाले छात्र छात्राएं वोटर बने तथा अपने परिवार के अर्हता वाले युवाओं व छूट हुए लोगो को भी मतदाता बनने के लिए जागरूक व प्रेरित करे। प्राचार्य डा अरविंद कुमार सिंह ने इस विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम का लाभ उठाकर मतदाता सूची में त्रुटि सुधार कराने, 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके मतदाताओं का नाम जुड़वाने एवं मृत व बाहर चले गए मतदाताओं के नाम हटवाकर त्रुटिरहित मतदाता सूची तैयार करने में सहयोग करने की अपील किया। उन्होंने कहा कि सभी पात्र लोगों का नाम वोटर लिस्ट में दर्ज होना जरूरी है, साथ ही घर में आई नई बहुरिया का नाम भी जोड़ने का भी मौका है। जिला स्वीप कोआर्डिनेटर सैय्यद मोहम्मद मुस्तफा ने बताया गया कि मतदाता सूची में नाम जुड़वाने के लिए 28 नवम्बर अंतिम तिथि है। 24 नवम्बर को मतदान केंद्रों पर बीएलओ प्रातः 10 बजे से सांय 4 बजे तक उपस्थित रहेगी, सभी लोग अपना नाम वोटर लिस्ट में चेक कर सकते हैं तथा वोटर बनने के लिए आवेदन कर सकते हैं। वोटर बनने हेतु वोटर पोर्टल या वोटर हेल्पलाइन ऐप के माध्यम से भी आनलाइन आवेदन कर सकते हैं। संचालन ईएलसी समन्वयक डा संजय शर्मा ने किया। इस अवसर पर डा रणधीर कुमार, डा मनोज सोनकर, डा विकास सिंह, डा मुक्ता राजे, डा पुष्पा सिंह सहित सहकारी पी जी कालेज मेहरांवा के छात्र छात्राएं आदि उपस्थित रहे।

मातृ शिशु मृत्यु दर कम करने और खुशहाल समाज में लैंगिक समानता की अहम भूमिका – डाक्टर संजय जैन

अयोध्या। लिंग आधारित भेदभाव दूर करके न केवल सामाजिक खुशहाली लाई जा सकती है,बल्कि मातृ शिशु मृत्यु दर कम करने में भी इसकी अहम भूमिका है।वही किशोरियों की असमय मृत्यु रोकने के लिए जरूरी है कि लिंग आधारित भेदभाव न हो।यह बातें सीएमओ कार्यालय पर आयोजित शहरी समन्वय समिति की बैठक में लैंगिक समानता संबंधित संवेदीकरण कार्यक्रम मे सीएमओ डाक्टर संजय जैन कही।इस मौके पर समिति के सभी सदस्यों के जरिये शहर के सभी प्रमुख प्लेटफार्म पर लोगों को जागरूक करने की अपील की गई।सभी शहरी स्वास्थ्य केंद्रों और शहर स्तरीय बैठकों में लिंग संवेदीकरण सत्रों को भी रखा जाए।जेंडर चौम्पियन का चयन करें और उनका उपयोग निर्णयों में पुरुषों की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए करें, जो सूचित परिवार नियोजन विकल्पों को बढ़ावा देता है।महिला आरोग्य समितियों और आशा कार्यकर्ता को स्वास्थ्य सेवा में लिंग मुद्दों एवं परिवार और मातृ बाल स्वास्थ्य संबंधित निर्णयों में पुरुष भागीदारी के महत्व को बताएं।कार्यक्रम के दौरान अपेक्षा की गई।कार्यक्रम की अध्यक्षता अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी परिवार कल्याण डॉ पुष्पेंद्र कुमार ने किया।

संवेदीकरण

की प्रस्तुति पीएसआई इंडिया संस्था की राज्य प्रतिनिधि इशा सिंह ने की।इस मौके पर एसीएमओ डॉ डीके शर्मा,बीपी त्रिपाठी,एनयूएचम कोआर्डिनेटर व अन्य संबंधित विभागों के प्रतिनिधिगण भी मौजूद रहे।इस मौके पर विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक शार्ट फिल्म के जरिये सभी प्रतिभागियों को लैंगिक समानता और स्वास्थ्य सेवाओं के बेहतर परिणाम के बीच के महत्वपूर्ण कड़ी को दिखाया गया।

एसएसपी ने मिशन शक्ति फेज 5.0 अभियान में सराहनीय कार्य करने वाले समाज सेवी व पुलिस कर्मियों को किया सम्मानित

(डाक्टर अजय तिवारी जिला संवाददाता)

अयोध्या। पिछले माह 3 अक्टूबर 2024 से प्रारंभ होकर अनवरत तीन माह तक चलने वाले मिशन शक्ति फेज 5. 0 के तहत महिलाओं व बालिकाओं को सुरक्षा के प्रति बैनर,पोस्टर आदि के माध्यम से जागरूक करने के लिए एक अभियान चलाया जा रहा है।इस अभियान में सराहनीय भूमिका निभाने वाली पुलिस कर्मियों के साथ–साथ समाजसेवी संस्था से जुड़े महिलाओं व पुलिस कर्मियों को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राज करन नैय्यर ने गुरुवार को अपने कार्यालय पर प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।इसके अलावा उन्होंने समाज सेवा में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने वाली भारती सिंह को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।उन्होंने महिला उप निरीक्षक जागृति मौर्य,आरुषि पटेल तथा कविता मिश्रा को भी उन्होंने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।बताते चले कि उन्हें यह सम्मान ष्नारी सुरक्षा सम्मान, नारी स्वालंबन , एवं महिलाओं व बालिकाओं ,के विरुद्ध अपराध ,हिंसा ,पास्को एक्ट के हेतु जनपद में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में मिशन(शक्ति योद्धा)के रूप में कार्य करने के लिये सम्मानित किया गया। इस मौके पर मिशन शक्ति फेस 5–0 के नोडल अधिकारी बलवंत चौधरी सहित अन्य पुलिसकर्मी मौजूद रहे।

पुलिस मुठभेड़ में गो तस्कर गिरफ्तार, तमंचा कारतूस बरामद

ब्यूरो प्रमुख

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। शाहगंज कोतवाली थाना अंतर्गत शनिवार भोर में शाहगंज में खुटहन और खेतासराय थाने की पुलिस ने शातिर गो तस्कर को पुलिस मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार किया है। मुठभेड़ के दौरान उसके दाहिने पैर में गोली लगी आरोपी को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उसके कब्जे से तमन्चा, कारतूस और मोटर साइकिल बरामद हुई है। इस मामले में शनिवार को जानकारी देते हुए पुलिस अधीक्षक शहर अरविंद कुमार वर्मा ने बताया कि पुलिस अधीक्षक द्वारा अपराधियों की धर पकड़ हेतु चलाए जा रहे अभियान के क्रम में कि थानाध्यक्ष खुटहन दिव्य प्रकाश सिंह हमराहियों के साथ बनुआडीह नहर पुलिया पर चेकिंग कर रहे थे। तभी सूचना मिली कि खेतासराय थानाध्यक्ष रामाश्रय राय एक बदमाश का लेदरही से पीछा कर रहे हैं । बदमाश सेतुआपारा नहर की पटरी पकड़ कर बनुआडीह की तरफ आ रहा था। इस पर थानाध्यक्ष खुटहन और थानाध्यक्ष खेतासराय ने ऊसरबस्ती नहर पुल के पास घेराबन्दी की पुलिस को देखकर बदमाश भागने लगे पुलिस ने आत्म समर्पण के लिए कहा तो बदमाश ने तमंचे से पुलिस पर फायर कर दिया जवाबी फायरिंग में निसार पुत्र जलालुद्दीन निवासी मारुखपुर थाना खेतासराय को गोली लगी। घायल को अस्पताल में भर्ती कराया गया । उसके खिलाफ संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। गिरफ्तार आरोपी के खिलाफ जिले के कई थानों में पशु क्रूरता और गौ हत्या निवारण आदि धाराओं के तहत पहले से ही 8 मामले दर्ज हैं।

बी आर पी इंटर कालेज में कृत्रिम बुद्धिमत्ता – वरदान या अभिशाप" पर वाद विवाद प्रतियोगिता आयोजित

ब्यूरो प्रमुख

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। बीव आरव पीव इन्टर कॉलेज मे विद्यालय के संस्थापक स्वर्गीय बंशीधर श्रीवास्तव की स्मृति मे वाद – विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका विषय था "कृत्रिम बुद्धिमत्ता वरदान या अभिशाप। प्रतियोगिता में जनपद के विभिन्न विद्यालयों के छात्र छात्राओं ने प्रतिभाग किया। प्रत्यहं स्थान बीव आरव पीव इन्टर कॉलेज की छात्रा अंशिका मिश्रा, द्वितीय स्थान होली चाइल्ड अकादेमी के कुँवर दिग्विजय सिंह एवं तृतीय स्थान होली चाइल्ड अकादेमी के ईशान गुप्ता और बीव आरव पीव इन्टर कॉलेज की तमन्ना चौधरी को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजेश कुमार यादव, सह – जिला विद्यालय निरीक्षक रहे। मुख्य अतिथि ने उपस्थित छात्रों को संबोधित करते हुए कृत्रिम बुद्धिमत्ता के फायदे और नुकसान पर चर्चा की। इस अवसर पर विद्यालय कमिटी के अध्यक्ष रवींद्र अस्थाना जी, मुक्तेश्वर बालिका इन्टर कॉलेज के प्रबंधक दिलीप कुमार श्रीवास्तव, डॉ रवींद्र नाथ यादव प्रधानाचार्य जी आई सी उपस्थित रहे। निर्णायक मण्डल में बी आर पी कॉलेज के अध्यापक विजय प्रकाश पाण्डेय, श्रीमती सीमा राज, होली चाइल्ड अकादेमी के अध्यापक प्रवेश कुमार सिंह ने निष्पक्षता के साथ निर्णय प्रस्तुत किया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ प्रमोद कुमार श्रीवास्तव ने आए हुए प्रतिभागियों, अध्यापकों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर विद्यालय के अध्यापक राजीव श्रीवास्तव, प्रकाश यादव, हीरालाल, डॉ विमल श्रीवास्तव, शैलेन्द्र मोहन अस्थाना, रवींद्र कुमार श्रीवास्तव, शुभम तिवारी, आकाश श्रीवास्तव, रवींद्र यादव, विद्या निवास मिश्रा, मंजीत कुमार आदि अध्यापक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉव ऋषि श्रीवास्तव ने किया।उक्त जानकारी विद्यालय के मीडिया प्रभारी दीपक श्रीवास्तव ने दिया।

25, 26 नवंबर को रोजगार मेले का आयोजन

ब्यूरो प्रमुख

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। जिला सेवायोजन अधिकारी ने अवगत कराया है कि मुख्य विकास अधिकारी के निर्देश के क्रम में बहुराष्ट्रीय सुरक्षा कम्पनी एस0आई0एस0 द्वारा 13 नवम्बर 2024 से 07 दिसम्बर 2024 तक ब्लाकवार विभिन्न तिथियों में पंजीयन हेतु रोजगार मेला कैम्प का आयोजन किया जा रहा है, तत्क्रम में 25 नवम्बर 2024 को मछलीशहर एवं 26 नवम्बर 2024 को विकास खण्ड महाराजगंज परिसर जौनपुर में प्रातः 10 बजे से रोजगार मेला का आयोजन किया गया है। जिसमें भर्ती हेतु सुरक्षाकर्मियों का पंजीयन शिविर आयोजित किया जायेंगा, जिनकी शैक्षिक योग्यता हाईस्कूल, बी0ए0 एवं लम्बाई 168 से0मी0, सीना 80 से 85 से0मी0 तथा आयु सीमा 19 से 40 वर्ष के बीच, अभ्यर्थी का वजन 56 से ज्यादा व 90 से कम होना अनिवार्य हैं, अभ्यर्थी प्रतिभाग कर अर्हता पूर्ण करते हुए रोजगार प्राप्त कर सकते है। जिला सेवायोजन अधिकारी एवं सहायक सेवायोजन अधिकारी ने बताया की रोजगार मेला में सम्मिलित होने के लिए अभ्यर्थियों को अपने साथ समस्त शैक्षिक प्रमाण पत्रों की छायाप्रति आई0डी0प्रुफ सहित एवं वेब पोर्टल https:// rojgaar sangam. up.gov.in पर जॉब सीकर के रूप में पंजीकरण उपरांत आवेदन करते हुए, रोजगार हेतु अधिक से अधिक संख्या में प्रतिभाग करें।

दबंगों ने जलाई दुकान नगदी समेत खाने–पीने के समान जले

ब्यूरो प्रमुख

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के सामने दबंगों ने एक गुमटी दुकान को जलाकर राख कर दिया। जिसमें रखा नगदी समेत हजारों रुपए के सामान जलकर राख हो गए। सूचना पहुची पुलिस ने मामले की छानबीन शुरू कर दी। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के सामने जासोपुर मोड पर राम सिंगर यादव के गुमटी में दुकान कर जनरल स्टोर से लेकर खाने–पीने के समान की दुकान संचालित कर रहे थे । शुक्रवार की रात करीब 12 बजे दुकान धु धु कर जलने लगी ।आसपास के लोगों की सूचना पर रामसिंगार वहा पहुंचे और पुलिस को सूचना दिए सूचना मिलते ही पूर्वांचल विश्वविद्यालय चौकी प्रभारी संतोष कुमार मय फोर्स मौके पर पहुंच गए। इसी दौरान पुलिस की सूचना पर फायर ब्रिगेड दमकल की गाड़ियां पहुंच गई। लोगों ने जब तक उसे पर पानी की बौछार करते तब तक गुमटी की दुकान जलकर राख हो गया। दुकान मालिक राम सिंगर यादव के मुताबिक दुकान में 50 हजार नगदी और खाने पीने वाला जनरल के करीब 50 हजार के सामान जलकर राख हो गये ।उनका कहना है कि आसपास के अराजक तत्वो ने हीं दुकान में आग लगाई है और आग लगाकर फरार हो गया हालांकि उन्होंने अज्ञात लोगों के खिलाफ

पुलिस को तहरीर दी पुलिस मामले की छानबीन में जुट गई। चर्चा है कि आसपास की जो नशेड़ी लोग घूमते रहते हैं वहीं रंजिश बस दुकान में आग लगाए हैं। जिससे सभी सामान जलकर राख हुआ ।पीड़ित ने राम श्रृंगार ने कहा कि उधारी सामान न देने पर दबंगों ने किया इस घटना को अंजाम दिया।

राजकीय महाविद्यालय के रूप में चलेंगे 71 नए महाविद्यालय, सामान्य फीस पर मिलेगी उच्च शिक्षा

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी लखनऊ में शुक्रवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में कैबिनेट बैठक संपन्न हुई। उत्तर प्रदेश में उच्च शिक्षा के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने के लिए प्रदेश सरकार की ओर से नवनिर्मित व निर्माणाधीन 71 महाविद्यालयों को राजकीय महाविद्यालयों के रूप में चलाया जाएगा। यहां पर सामान्य शुल्क में उच्च शिक्षा के अवसर मिलने के साथ ही 2556 पदों पर भर्ती भी होगी।

उच्च शिक्षा विभाग के इस प्रस्ताव पर शुक्रवार को कैबिनेट ने मुहर लगा दी है। उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने बताया कि वर्तमान में 171 राजकीय महाविद्यालय चल रहे हैं। इसी क्रम में 71 अन्य महाविद्यालयों में 17 को राज्य विश्वविद्यालयों के संघटक महाविद्यालयों के रूप में चलाया जा रहा है। जबकि अन्य बनकर लगभग तैयार हैं। अब इन सभी 71 महाविद्यालयों का संचालन सरकार करेगी। यह सभी राजकीय महाविद्यालय के रूप में चलेंगे और यहां पर सभी सुविधाएं व शुल्क भी राजकीय महाविद्यालयों वाले लगेंगे।

चतुर्थ श्रेणी के 710 पद संविदा पर रखे जाएंगे

उन्होंने बताया कि इन महाविद्यालयों का पूरा विकास खर्च सरकार वहन करेगी। इन महाविद्यालयों में कला, वाणिज्य व विज्ञान संकाय की पढ़ाई शुरू की जाएगी। इसके लिए प्राचार्य के 71, असिस्टेंट प्रोफेसर के 1136, तृतीय श्रेणी कर्मचारियों के 639 व चतुर्थ श्रेणी के 710 पदों पर भर्ती की जाएगी। इसमें 1846 पद सृजित किया जाएगा। जबकि, चतुर्थ श्रेणी के 710 पद संविदा पर रखे जाएंगे।

रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे

मंत्री ने बताया कि इससे एक तरफ जहां उच्च शिक्षा में छात्र–छात्राओं की संख्या बढ़ेगी, शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ेगी। रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे।

थाना समाधान दिवस में आई शिकायतों के प्रति गंभीर दिखे अधिकारी

'ब्यूरो रिपोर्ट–जनार्दन श्रीवास्तव'

'पाली–(हरदोई)' थाना परिसर में थाना समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता अपर पुलिस अधीक्षक मार्तण्ड प्रकाश सिंह ने की। इस मौके पर सवायजपुर तहसीलदार माधव उपाध्याय (पीसीएस) प्रोवेशन,क्षेत्राधिकारी शाहाबाद अनुज कुमार मिश्रा उपस्थित रहे। थाना परिसर में आयोजित थाना दिवस में पुलिस और राजस्व से संबंधित कुल 48 शिकायतें आईं जिनमें से 43 राजस्व व 05 शिकायतें पुलिस से संबंधित थी। किसी भी शिकायत का मौके पर निस्तारण नहीं हो पाया। शिकायतों के निस्तारण के लिए संबंधित विभागीय अधिकारियों और कर्मचारियों को निर्देशित किया गया। अपर पुलिस अधीक्षक मार्तण्ड प्रकाश सिंह ने कहा कि थाना समाधान दिवस में आने वाली सभी शिकायतों को गंभीरता से लेकर उनका ससमय निस्तारण किया जाए। तहसीलदार उपाध्याय ने कहा कि शासन की मंशा है कि थाना दिवस में आने वाली शिकायतों को संबंधित विभागीय अधिकारी और संबंधित कर्मचारी ससमय जाँच करके निस्तारित करें। संबंधित लेखपाल एक रजिस्टर बनाकर थाना दिवस की शिकायतों के निस्तारण का विस्तृत विवरण दर्ज किया जाये। तहसीलदार ने राजस्व कर्मियों को निर्देशित करते हुए कहा क्षेत्र में जहाँ कहीं भी भूमि विवाद हो वहां पुलिस एवं राजस्व कर्मी संयुक्त टीम के माध्यम से सामंजस्य स्थापित कर भूमि से संबंधित विवादों का निस्तारण प्रमुखता से करें। उन्होंने कहा कि भूमि विवाद से संबंधित कोई भी प्रकरण ज्यादा समय तक लंबित न रखा जाए। अपर पुलिस अधीक्षक एम0पी0सिंह ने मातहतों को पुलिस से संबंधित प्राप्त शिकायत पत्रों का समय सीमा के अंतर्गत गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने के निर्देश दिए। क्षेत्राधिकारी अनुज कुमार मिश्रा ने कहा कि भूमि विवादों का निपटारा करने के लिए जहाँ कहीं भी पुलिस बल की आवश्यकता है वहां तत्काल राजस्व कर्मियों को पुलिस बल मुहैया कराया जायेगा। थाना समाधान दिवस पर थाने का स्टॉफ राजस्व विभाग के संबंधित लेखपाल ,राजस्व निरीक्षक व अन्य लोग मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

डीआईओएस परीक्षा केदों का कर रहे बारीकी से निरीक्षण

अयोध्या। इंटरमीडिएट व हाई स्कूल बोर्ड परीक्षा की परीक्षा तिथिं की घोषणा माध्यमिक शिक्षा परिषद बोर्ड ने कर दिया है। इसी कड़ी में जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ पवन तिवारी बोर्ड परीक्षा को नकल विहीन व पारदर्शी बनाने में कोई कर कम नहीं छोड़ रहे हैं। जिला विद्यालय निरीक्षक डॉक्टर पवन कुमार तिवारी ने बताया कि वे स्वयं सुबह से लेकर देर शाम तक जिले मे परीक्षा केदो की बारीकी से जांच कर रहे हैं।उन्होंने बताया कि हमेशा की तरह इस बार भी उन्हें कॉलेज को परीक्षा केंद्र बनाया गया है जो माध्यमिक शिक्षा परिषद बोर्ड द्वारा तय किए गए मानक पर खड़े उतर रहे हैं। अभी तक उन्होंने जिले के कई परीक्षा केदो की सघन जांच किए हुए हैं। बताया कि प्रतिदिन कम से कम दो दर्जन से अधिक परीक्षा केदो का निरीक्षण किया जा रहा है।जहां पर कोई भी कमी मिल रही है वहां के प्रबंधक तथा प्रधानाचार्य को इसे दूर करने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिए जा रहे हैं। जिला विद्यालय निरीक्षक डॉक्टर तिवारी ने बताया जिन परीक्षा केदो से आपत्तियां आई हुई हैं उसका भी जांच जिला अधिकारी को भेजा जा रहा है।

जेवर नगदी लेकर छात्रा हुई लापता, एक आरोपी युवक के विरुद्ध पुलिस ने केस किया दर्ज

अयोध्या (डीकेयू लाइव ब्यूरो चीफ) सुरेंद्र कुमार। बीकापुर अयोध्या नगर पंचायत क्षेत्र की निवासी स्नातक की छात्रा घर में रखी नगदी, जेवर, शैक्षिक प्रमाण पत्र लेकर अचानक लापता हो गई। लापता छात्रा के बाबा की तहरीर पर कोतवाली पुलिस ने गैर समुदाय के अयोध्या शहर निवासी एक आरोपी छात्र के विरुद्ध अगवा करने की धारा में अभियोग पंजीकृत किया है। पीड़ित बाबा द्वारा कोतवाली में गुरुवार को दी गई तहरीर के मुताबिक वह थल सेना से रिटायर्ड अधिकारी है। उनकी करीब 20 वर्षीय नातिन बीएससी द्वितीय वर्ष की छात्रा है। आरोप है कि अयोध्या शहर के राम जी समोसा के निकट का निवासी आरोपी युवक आलोक यादव उनकी नातिन के साथ पढ़ाई करता था। और फोन के जरिए उनकी नातिन से बातचीत भी करता था। बताया कि 20 नवंबर को रात करीब 10 से 11 बजे के बीच आलोक उनकी नातिन को बहला फुसला कर भाग ले गया है। मामला अलग–अलग समुदाय का होने के चलते तहरीर मिलने के बाद हरकत में आई कोतवाली पुलिस द्वारा रिपोर्ट दर्ज करके तलाश शुरू की गई है।

खुद को बिजली विभाग में जेई बताकर बिल्डर से 64 लाख ऐंठे

लखनऊ, संवाददाता। रुचिखंड निवासी बिल्डर राम तीरथ पांडेय ने जालसाज पर 64 लाख रुपये हड़पने का आरोप लगाते हुए आशियाना थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है। आरोपी ने खुद को बिजली विभाग में तैनात जूनियर इंजीनियर (जेई) बताया था। राम तीरथ पांडेय गौरव कंस्ट्रक्शन डेवलपर्स कंपनी के मालिक हैं। कुछ समय पहले उनकी मुलाकात संत रविदास नगर के निवासी देवेंद्र तिवारी से हुई थी। उसने खुद को पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड का जेई बताते हुए विभाग में काम दिलाने का झांसा दिया था। इसके बदले 64 लाख रुपये लिए थे। काम न मिलने पर जब रकम मांगी तो आरोपी ने चेक दिए जो बाउंस हो गए।

मुंशीपुलिया चौराहे पर लग सकती है मुलायम सिंह यादव की प्रतिमा

लखनऊ, संवाददाता। पूर्व मुख्यमंत्री स्व. मुलायम सिंह यादव की चौमुखी प्रतिमा मुंशीपुलिया चौराहे पर लगाई जा सकती है। इस्माइलगंज प्रथम वार्ड का नाम भी उनके नाम पर किया जा सकता है। बृहस्पतिवार को सपा पार्षदों व सपा नगर अध्यक्ष ने पूर्व मुख्यमंत्री की जयंती की पूर्व संध्या पर महापौर को कैंप कार्यालय में मांग पत्र सौंपा। वरिष्ठ सपा पार्षद व पार्षद दल के पूर्व नेता यावर हुसैन रेशू ने बताया यूपी के तीन बार मुख्यमंत्री व रक्षा मंत्री रहे पद्मविभूषण 'नेताजी' मुलायम सिंह यादव की शहर में कोई प्रतिमा नहीं लगी है। उनके नाम पर सड़क, चौराहा या वार्ड भी नहीं हैं। ऐसे में उनके नाम पर नगर निगम जोन सात में आने वाले इस्माइलगंज प्रथम वार्ड का नामकरण करने व मुंशीपुलिया चौराहे पर उनकी प्रतिमा लगवाने का प्रस्ताव सपा पार्षदों ने बैठक में पास किया है। इसके लिए महापौर सुषमा खर्कवाल के कैंप कार्यालय में मांग पत्र दिया है। महापौर ने प्रस्ताव को नगर निगम कार्यकारिणी की बैठक में रखने का आश्वासन दिया है। इस मौके पर लखनऊ महानगर अध्यक्ष फाखिर सिद्दीकी, महासचिव इरशाद अहमद गुड्डू, सपा पार्षद दल नेता कामरान बेग, पार्षद शफीकुर्रहमान चचा, महानगर मीडिया प्रभारी गौरव सिंह यादव व प्रदेश सचिव प्रदीप कनौजिया मौजूद रहे।

शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म, आरोपी गिरफ्तार

लखनऊ, संवाददाता। युवती ने प्राइवेट कंपनी कर्मी के खिलाफ शादी का झांसा देकर दुष्कर्म का केस गुडंबा थाने में बृहस्पतिवार को दर्ज कराया है। पुलिस ने शुक्रवार को आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया है। इंस्पेक्टर प्रभातेश कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि प्रयागराज निवासी 25 वर्षीय युवती पैकरामऊ में रहकर एक यूनिवर्सिटी से पढ़ाई कर रही हैं। आरोपी कृष्णानगर निवासी प्रियम द्विवेदी (28) भी यूनिवर्सिटी से लॉ की पढ़ाई कर रहा था। पीड़िता के मुताबिक मार्च 2022 में उसकी मुलाकात प्रियम से हुई थी।

कारोबारी को अगवा कर क्रिप्टोकरेंसी वसूलने के मामले में एक आरोपी गिरफ्तार

लखनऊ, संवाददाता। कारोबारी फैसल शेख को अगवा कर क्रिप्टोकरेंसी वसूलने के मामले में गोमीतनगर पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस वारदात में शामिल अन्य की तलाश में जुटी है। क्रिप्टोकरेंसी के कमीशनबाजी के विवाद में कारोबारी का अपहरण किया गया था। डीसीपी पूर्वी शशांक सिंह के अनुसार छानबीन में सामने आया कि कारोबारी को अगवा कर जबरन 15999 क्रिप्टोकरेंसी वसूलने में इंदिरानगर के पानीगांव निवासी अफजल की भूमिका मिली थी। शुक्रवार को पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया। पूछताछ में उसने बताया कि क्रिप्टोकरेंसी के लेनदेन में कमीशनबाजी को लेकर उसने नामजद आरोपी अंकित व उसके साथियों संग मिलकर वारदात को अंजाम दिया था। सभी आरोपियों ने मोबाइल फोन बंद कर लिए हैं। इसके चलते सही लोकेशन नहीं मिल पा रही है।

यह है पूरी घटना

चिनहट निवासी कारोबारी फैसल, उसके भाई जैद व साथी राशिद का अंकित नाम के आरोपी व उसके साथियों से गोमतीनगर के बराक रेस्टोरेंट में क्रिप्टोकरेंसी के लेनदेन को लेकर विवाद हो गया था। अंकित व उसके साथियों ने पीड़ित पक्ष को मारापीटा और कार से अगवा कर ले गए। 1090 चौराहे के पास उनके भाई व साथी को उतार दिया। कारोबारी को इंदिरा डैम ले गए। वहां 15999 क्रिप्टोकरेंसी ट्रांसफर करा ली। पीड़ित ने अंकित समेत चार से पांच अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज कराया था। पीड़ित फैसल ने अंकित सहित चार से पांच अज्ञात के खिलाफ गोमतीनगर थाने में केस दर्ज कराया है।

अखिलेश की पार्टी कार्यकर्ताओं से अपील, सतर्क रहें... हम नैतिक रूप से जीत चुके

लखनऊ, संवाददाता। यूपी में उपचुनाव की नौ सीटों पर मतदान के बाद मतगणना से एक दिन पहले सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने पार्टी नेताओं व समर्थकों से अपील की है कि वो पूरी तरह सतर्क रहें और शनिवार को मतगणना के बाद जीत का प्रमाण पत्र लेकर ही लौटें। उन्होंने कहा कि हम नैतिक रूप से जीत चुके हैं, बस प्रमाणपत्र मिलना बाकी है। अखिलेश यादव ने सोशल साइट एक्स पर बयान जारी कर कहा कि इंडिया गठबंधन–समाजवादी पार्टी की सजगता व सक्रियता से जिस तरह हमारे मतदाताओं, समर्थकों, कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों, नेताओं, उम्मीदवारों, समस्त पीडीए समाज व कुछ ईमानदार मीडियाकर्मियों ने भाजपा सरकार की चुनावी धांधली का डटकर सामना किया है, उसकी प्रशंसा हर ओर हो रही है। ये सक्रियता आगे भी जारी रहेगी और अपनी सरकार बनाएगी। सच तो ये

है कि जिस प्रकार भाजपा और उनके संगी–साथियों के चुनावी घपलों से लेकर राजनीतिक हथकंडों तक का लगातार पर्दाफाश हो रहा है, उससे भाजपा का समर्थन करनेवालों की संख्या दिन– पर –दिन गिरती जा रही है। जनता भाजपा को चुनना नहीं चाहती है, इसीलिए भाजपा भ्रष्ट शासन–प्रशासन–प्रचार तंत्र का दुरुपयोग करके सरकार में बने रहना चाहती है। उम्मीद है धीरे–धीरे सबको ये समझ आ जाएगा कि चाहे नेता हों या अधिकारी, भाजपा सबको पहले लालच या अन्य किसी दबाव या भावनात्मक रूप से झांसा देकर गलत काम करवाती है फिर जब वो पकड़े जाते हैं, उनका निलंबन होता है, उनपर मुकदमा होता है, उनकी नौकरी जाती है या उनको जेल होती है या फिर समाज–परिवार अथवा विभाग में बदनामी होती है तो भाजपा उनसे पल्ला झाड़ लेती है।

भाजपाई फंसानेवाले लोग हैं, बचानेवाले नहीं। भाजपा किसी की सगी नहीं है। इसीलिए इंडिया गठबंधन–सपा के सभी जागरूक उम्मीदवारों, कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों, नेताओं, समर्थकों व समझदार आम जनता से ये अपील है कि वे डटे रहें, अपने वोट की दिन–रात रक्षा करें व कल मतगणना के लिए पूरी तरह सावधान रहें और जीत का प्रमाणपत्र लेकर ही लौटें। हम नैतिक रूप से जीत चुके हैं, बस प्रमाणपत्र मिलना बाकी है। अखिलेश यादव ने मीडियाकर्मियों से भी अपील की है। उन्होंने कहा कि ईमानदार मीडियाकर्मियों से भी ये अतिरिक्त अपील है कि वो भी अपने कैमरे और कच्छम लेकर मुस्तैदी से डटे रहें और बड़े–बड़े मीडिया चौनलों और उनके पत्रकारों को बताएं कि कोई बड़ा दिखावटी चमक–दमक से नहीं बल्कि अपने ईमानदार काम से होता है। आपकी सत्यनिष्ठा और सकारात्मक सक्रियता ही आपकी सार्थकता है। आपका एक सच सौ झूठों पर भारी साबित होगा।

खाद्य सामग्री के दो मंजिला गोदाम में लगी आग, तीन घंटें मशक्कत के बाद दमकल कर्मियों ने पाया काबू

लखनऊ, संवाददाता। यूपी के लखनऊ में गोमती नगर क्षेत्र में शुक्रवार को दो मंजिला खाद्य सामग्री के गोदाम में आग लग गई। हादसे

से वहां हड़कंप मच गया। सूचना पर पहुंचे दमकल कर्मियों ने पांच गाड़ियों की मदद से तीन घंटे मशक्कत करके आग पर काबू पाया। खरगापुर के गंगोत्री विहार में दीपांशु अग्रवाल का दो मंजिला खाद्य सामग्री का श्री बालाजी डिस्ट्रीब्यूटर नामक गोदाम है। गोदाम में ही बेसमेंट बना हुआ है। शुक्रवार सुबह करीब 8रू15 बजे बंद गोदाम के भूतल और बेसमेंट में आग लग गई। ऊंची–ऊंची लपटें और धुएं के गुब्बार देख अगल–बगल के लोग घबरा गए। लोगों ने घटना की जानकारी दमकल और गोदाम मालिक को दी। दो गाड़ियों के साथ घटनास्थल पर पहुंचे एफएसओ गोमतीनगर सुशील यादव आग बुझाने में जुट गए। मगर आग और विकराल हो गई। इस पर सीएफओ मंगेश कुमार हजरतगंज, इंदिरानगर और पीजीआई फायर स्टेशन से तीन गाड़ियां लेकर घटनास्थल पहुंचे।

दमकल कर्मियों का सांस लेना हुआ दूभर

गोदाम में भरे धुएं के कारण दमकल कर्मियों का सांस लेना दूभर हो गया। कर्मी बीआर सेट पहन कर अंदर दाखिल हुए। उन्होंने स्मोक एग्जॉस्ट से धुआं बाहर निकाला। फिर आग पर काबू पाना शुरू किया। कड़ी मशक्कत के बाद तीन घंटे में आग पर काबू पा लिया गया। एफएसओ गोमतीनगर ने बताया कि गनीमत रही कि घटना के समय गोदाम में कोई नहीं था।

नहीं तो बड़ा हादसा हो सकता था। आग शॉर्ट सर्किट से लगी थी। आग के कारण गोदाम में रखे बिस्किट, कुरकुरे सहित अन्य खाद सामग्री जल गई। घटना के कारण उनका लाखों का नुकसान हो गया।

सॉल्वर बैठाकर बने दरोगा, जांच के दौरान तीन और एसआई के खिलाफ एफआईआर

लखनऊ, संवाददाता। पुलिस भर्ती परीक्षा में सॉल्वर बैठाकर दरोगा बनने वाले महिला समेत चार लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने के बाद तीन और दरोगा भी आरोपी पाए गए हैं। मामले में उनके खिलाफ भी एफआईआर दर्ज करा दी गई है। घटना का खुलासा उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड की उच्च स्तरीय समिति की जांच में हुआ है। बोर्ड में तैनात इंस्पेक्टर सत्येंद्र कुमार ने बुधवार देर रात हुसैनगंज थाने में चारों आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई थी। जिन तीन आरोपी दरोगाओं के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई गई है वो जुलाह पूरी आगरा, पीपीगंज गोरखपुर और गंगी बाजार, महाराजगंज के रहने वाले हैं।

ये था पूरा मामला

बोर्ड ने उपनिरीक्षक नागरिक पुलिस और पुरुषों के लिए प्लाटून कमांडर, पीएसी एवं अग्निशमन द्वितीय अधिकारी के पदों पर सीधी भर्ती 2020–21 की ऑनलाइन लिखित परीक्षा कराई थी। आरोप है कि मंटी बासी अलीगढ़ निवासी अभ्यर्थी गौरव कुमार 13 नवंबर 2021 को भर्ती परीक्षा में शामिल हुआ। गौरव का परीक्षा केंद्र कॉस्मो फाउंडेशन जानकीपुरम विस्तार में था। उपनिरीक्षक के पद पर चयन के बाद गौरव को प्रशिक्षण पर भेज दिया गया। इस बीच भर्ती परीक्षा को लेकर इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ में एक रिट याचिका संदीप परिहार व 28 अन्य बनाम यूपी राज्य व अन्य दाखिल की गई। इसमें गौरव कुमार के बोर्ड स्तर और ऑनलाइन लिखित परीक्षा के समय लिए गए बॉयोमीट्रिक पहचान भिन्न मिले। पता चला कि दरोगा का प्रशिक्षण ले रहे गौरव ऑनलाइन लिखित परीक्षा में खुद शामिल नहीं हुए थे। उसने अपनी जगह सॉल्वर बिठाया था। इसी तरह फफोटू एटा निवासी मालती की हाथरस रोड आगरा स्थित परीक्षा केंद्र एसपीएस इंफोटेक श्री प्रताप सिंह महाविद्यालय में 17 नवंबर 2021 को ऑनलाइन परीक्षा थी। मालती ने भी अपनी जगह सॉल्वर बिठाया था। जांच में यह भी पता चला कि मचकौली बुलंदशहर निवासी निर्भय सिंह जादौन की 20 नवंबर 2021 को सिकंदरा, आगरा में यश इंफोटेक ऑनलाइन परीक्षा केंद्र में परीक्षा थी। निर्भय ने भी अपनी जगह सॉल्वर बिठाया था। वहीं, शांतिकुंज रोहता रोड, मेरठ निवासी अभ्यर्थी रोहित कुमार भी जांच में सॉल्वर बैठाकर परीक्षा दिलाने के आरोपी पाए गए। रोहित को 27 नवंबर 2021 को छात्रशक्ति इंफो सॉल्यूशन कुर्सी रोड पर परीक्षा में बैठना था।

सड़क हादसों में दो लोगों की मौत हो गई

लखनऊ, संवाददाता। सरोजनीनगर और बीकेटी में हुए सड़क हादसों में दो लोगों की मौत हो गई। आशियाना के सेक्टर आई निवासी राममिलन (50) निजी कंपनी में काम करते थे। बृहस्पतिवार रात वह बाइक से घर जा रहे थे। हेलमेट नहीं लगाए थे। रात 10.30 बजे ट्रांसपोर्टनगर में अनिल कार्गो के पास अज्ञात वाहन की टक्कर से उनकी मौत हो गई। परिवार में पत्नी विमला, बेटे शिवम, सत्यम और एक बेटी सलोनी है। उधर, बीकेटी में शुक्रवार सुबह साढ़े सात बजे सीतापुर हाईवे पर रामपुर बेहड़ा गांव के पास हादसे में घायल 45 वर्षीय युवक पड़ा मिला।पुलिस ने उसे राम सागर मिश्र हॉस्पिटल पहुंचाया, वहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस के मुताबिक युवक की शिनाख्त नहीं हो सकी है।

दो स्मार्ट मीटरों में मिला शंट, लोगों ने घेराव कर किया हंगामा

लखनऊ, संवाददाता। बिजली चेकिंग करने पहुंची टीम को नूरबाड़ी इलाके में दो स्मार्ट मीटरों में शंट लगा मिला। लोगों ने टीम का घेराव कर हंगामा करना शुरू कर दिया। इलाके में 13 उपभोक्ता बिजली चोरी करते मिले। टीम ने इन पर बिजली चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराई है। मुख्य अभियंता रवि अग्रवाल ने बताया कि अवर अभियंता राजेश सिंह ने टीम के साथ तड़के बृहस्पतिवार को नूरबाड़ी इलाके में जांच करने पहुंचे। यहां बंटी जायसवाल व मेहंगी राजा के घरों में लगे मीटरों में टर्मिनल प्लेट के बीच शंट लगी मिली। बंटी के घर में तीन किलोवाट एवं मेहंदी राजा के यहां चार किलोवाट का बिजली कनेक्शन है। अपट्रान खंड के एक्सईएन कुलदीप श्रीवास्तव ने बताया कि स्लो स्मार्ट मीटरों को पकड़ने के बाद लोगों ने हंगामा और घेराव करके जांच को प्रभावित करने की कोशिश की। इस पर पुलिस को सूचना दे दी गई। इससे हंगामा करने वाले किनारे हो गए। दोनों उपभोक्ताओं की बिजली काटने के बाद मीटरों को उतार कर सील कर दिया गया है। चेकिंग के दौरान ही 13 बिजली चोरी करने वाले संतोष, चंदन, दीपक, जितेंद्र, रंजीत, इलियास, सुषमा, सावित्री, अली मिर्जा, मोहम्मद रजी, बंटी जायसवाल एवं मेहंदी राजा पर एफआईआर दर्ज कराई गई है।

अवर अभियंता ने एक्सईएन को गलत सूचना देकर काटी बिजली

सीतापुर रोड खंड के तहत मड़ियांव स्थित बसंत विहार के उपभोक्ताओं को बृहस्पतिवार को क्षेत्र के अवर अभियंता व एसडीओ की मनमानी भारी पड़ी। दोनों ने जर्जर तारों को बदलने वाली कंपनी के लिए बृहस्पतिवार सुबह 9:45 से दोपहर 2:30 बजे तक बिजली काट दी। उपभोक्ताओं ने दोपहर 12 बजे एक्सईएन एके शुक्ला से शिकायत की तो उन्होंने जानकारी की। एक्सईएन ने बताया कि अवर अभियंता ने उन्हें फाल्ट आने के कारण बिजली बंद करने का कारण बताया है। जबकि कंपनी के कर्मियों ने पोल से तारों को काट कर नीचे गिरा दिया था।

खनन की रंगदारी न देने पर युवक को मारी गोली

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ के शिवपुरी गांव के पास शुक्रवार की सुबह लगभग 7रू00 बजे महेंद्र ने खनन का काम करने वाले कुलदीप सिंह को गोली मार दी। घटना के दौरान कुलदीप ने अपना बायां हाथ सामने कर दिया, जिससे गोली उनके हथेली को पार करती हुई निकल गई।

घटना को अंजाम देने के बाद आरोपी फरार हो गए। दिग्वि गांव निवासी कुलदीप सिंह का आरोप है कि शिवपुरी गांव की सीमा में उनका मिट्टी खनन का काम चल रहा है। प्रशासन से इसकी अनुमति प्राप्त है। शुक्रवार की सुबह लगभग 7:00 बजे वह खनन स्थल से वापस लौट रहे थे। कच्चे चक मार्ग पर कठवारा निवासी महेंद्र सिंह मिले। उन्होंने गाली देते हुए कहा कि मिट्टी नहीं भरवाओगे। इसके बाद असलहे से फायर कर दिया। गोली कुलदीप की बाई हथेली से होकर निकल गई।

मिट्टी खनन को लेकर रंगदारी की मांग

आरोप है कि मिट्टी खनन को लेकर पांच हजार रुपया रात भर का मांगा जा रहा था, जिसे कुलदीप ने नहीं दिया था। इसके बाद शुक्रवार की सुबह यह घटना हो गई।

साथी राहुल की कुलदीप से फोन पर चल रही थी बात

कुलदीप सिंह का आरोप है कि घटना के समय वह साथी राहुल से फोन पर बात कर रहे थे। फोन दाहिने हाथ से पकड़े थे। इसलिए पूरी घटना राहुल ने भी सुनी है। घटना की सूचना कुलदीप ने ही पुलिस को दी। इसके बाद पुलिस ने कुलदीप को इलाज के लिए राम सागर मिश्र हॉस्पिटल पहुंचाया, जहां से उन्हें बलरामपुर अस्पताल के लिए रेफर कर दिया गया।

सान्ध्य हिन्दी दैनिक देश की उपासना

स्वात्वाधिकारी में. प्रभुदयाल प्रकाशन की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक
श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव

मो0 – 7007415808, 9628325542, 9415034002
RNI NO - UPHIN/2022/86937
Email - deshkiupasanadailynews@gmail.com

समाचार–पत्र से संबधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायालय होगा।